04 - बच्चों के लिए प्रेरणादायक है बाल कविता संग्रह

05 - बच्चों के कलाकृतियों में भी होता है अनंत आकाश

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 16 फरवरी, 2025

06 - 126 केन्द्रों पर 25 फरवरी से शुरू होगी बोर्ड परीक्षाएं

07 - मनोरंजन के बहाने सामाजिक मुद्दों पर भी चोट

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 167, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

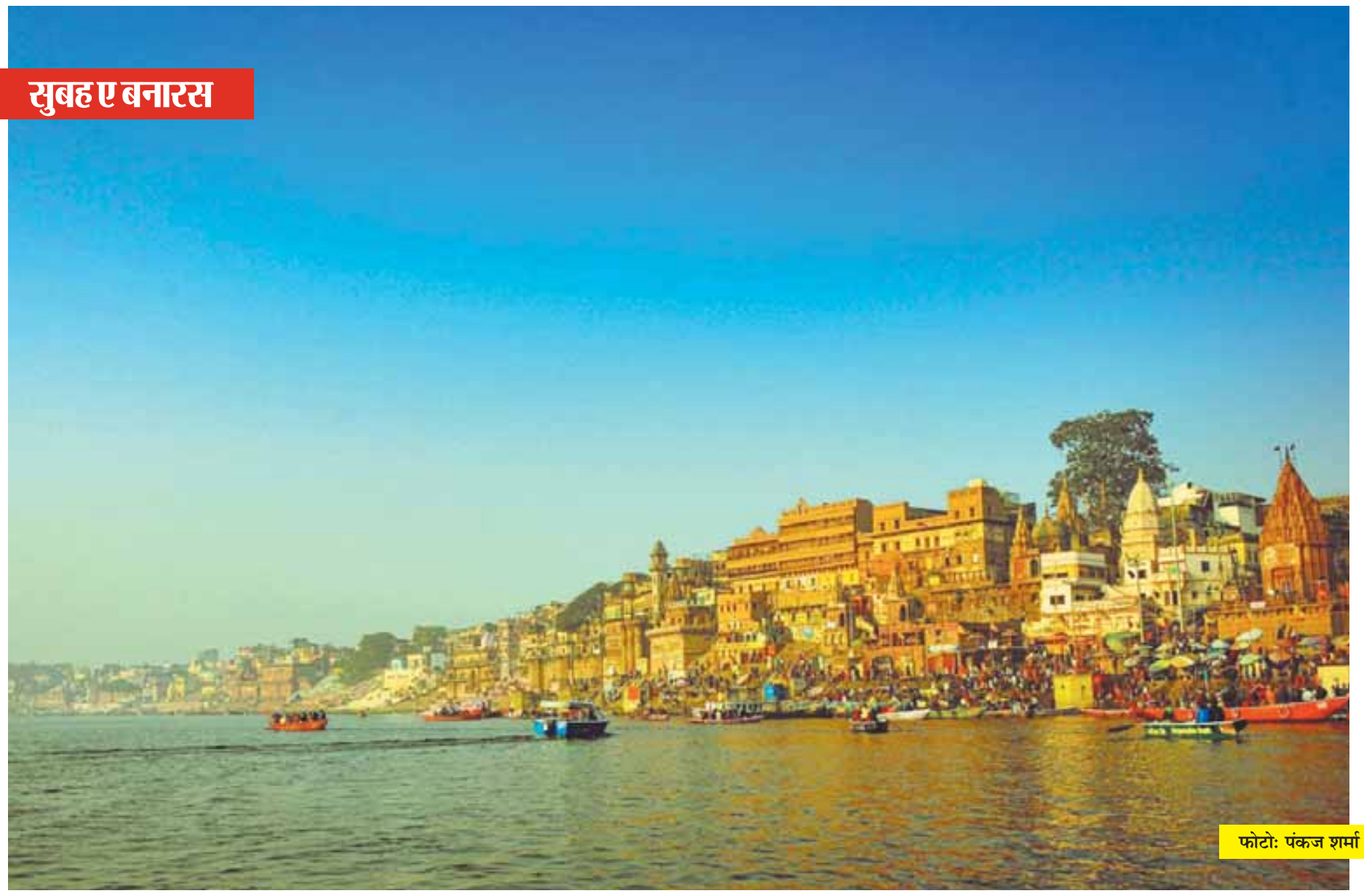

सुबह ए बनारस

फोटो: पंकज शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

5वीं पीढ़ी का 'फाइटर जेट' अब खुद बना रहा है भारत

● एएमसीए प्रोजेक्ट पर काम जारी, 2-3 साल में हो जाएगा पूरा

अमेरिका से एफ-35 फाइटर की डील पूरी होने में कई दिक्कतें

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारत खुद के 5वीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान एएमसीए प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, जो 2-3 साल में पूरा हो जाएगा। रूस भी भारत को यह फाइटर जेट बेचने का ऑफर दे चुका है। रूसी हथियार कंपनी ने बेंगलुरु एयर शो में कहा कि विमान की सप्लाई के अलावा हम भारत में इसका जॉइंट प्रोडक्शन भी करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा कि इस साल से अमेरिका भारत को कई अरब डॉलर के सैन्य उपकरण बेचेगा। साथ ही एफ-35 स्टील्थ फाइटर्स देने का भी रास्ता साफ करेगा। ट्रम्प ने भले ही भारत को एफ-35 विमान देने की पेशकश कर दी हो, लेकिन इस डील को पटरी पर लाना आसान नहीं होगा। अमेरिका को अपनी संसद कांग्रेस से मंजूरी लेनी होगी। फिर भारत लागत पर विचार करेगा। अप्रैल 2024 में सुरक्षा पर कैबिनेट समिति ने पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी फाइटर जेट के डिजाइन और विकास के लिए 15 हजार करोड़ की परियोजना को मंजूरी दी थी। इस फाइटर जेट का नाम 'एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट' है। इसका निर्माण हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा किया जाना है। एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी इस कार्यक्रम को क्रियान्वित और विमान को डिजाइन करने के लिए नोडल एजेंसी है। एडीए रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के अंतर्गत आता है। यह भारतीय वायु सेना के अन्य लड़ाकू विमानों से बड़ा होगा। इसमें दुश्मन के रडार से बचने के लिए उन्नत स्टील्थ विशेषताएं होंगी।

छग निकाय चुनाव

बीजेपी ने 36 पालिका, 10 निगम जीते

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ नगर निकाय चुनाव के नतीजे शनिवार को आ गए। राज्य के कुल 10 निगम, 49 नगरपालिका और 113 नगर पंचायतों पर 11 जनवरी को चुनाव हुए थे। बीजेपी ने सभी 10 नगर निगम में जीत दर्ज की है। यहां कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया। वही, राज्य की 49 नगर पालिकाओं में से भाजपा के खाते में 35 गई हैं। कांग्रेस ने 8 पर जीतीं। एएपी ने बिलासपुर की बोधरी नगर पालिका में जीत दर्ज की। निकाय चुनाव में एएपी की यह पहली जीत है। रायपुर में भाजपा की मेयर प्रत्याशी मीनल चौबे ने सबसे बड़ी जीत दर्ज की है। उन्होंने इस जीत के लिए जनता का धन्यवाद किया है। साथ ही उन्होंने कांग्रेस की हार पर तंज कसा है।

जीआईएस से पहले म.प्र. में 9,100 करोड़ के निवेश प्रस्ताव

इंदौर में बनेगा 4,000 करोड़ का डेटा सेंटर; युवाओं के लिए आएंगे रोजगार अवसर

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से शुक्रवार को 'श्री टेक डेटा लिमिटेड कंपनी' के सीईओ विजय आनंद ने भेंट की। उन्होंने प्रदेश में डेटा सेंटर, ग्रीन हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा और ट्रांसमिशन सेक्टर में निवेश की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कर 9100 करोड़ रूपये के निवेश का प्रस्ताव दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से प्रदेश में उन्नत बुनियादी ढांचे और तकनीकी विस्तार पर चर्चा हुई। श्री टेक डेटा लिमिटेड ने इंदौर में 4 हजार करोड़ रूपये की लागत से डेटा सेंटर स्थापित करने, बीना (सागर) में 3 हजार करोड़ रूपये की लागत से ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट विकसित करने, उज्जैन में 600 करोड़ रूपये के निवेश से सोलर पॉवर यूनिट स्थापित करने और उज्जैन में ही बिजली ट्रांसमिशन एवं वितरण अवसंरचना के लिए 1500 करोड़ रूपये के निवेश प्रस्ताव दिये। बैठक में जिला उद्योग केंद्र भोपाल के जीएम श्री कैलाश मानेकर भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश निवेशकों के लिए देश के सबसे अनुकूल स्थलों में से एक बन चुका है। मजबूत

बुनियादी ढांचे, सुलभ नीतियों और अनुकूल औद्योगिक वातावरण होने से वैश्विक कंपनियाँ प्रदेश में निवेश के लिए आकर्षित हो रही हैं। श्री टेक डेटा लिमिटेड के सीईओ श्री आनंद ने कहा कि यह निवेश प्रदेश में डिजिटल और हरित ऊर्जा क्रांति को गति देगा, जिससे अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे का विकास होगा और हजारों नए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। उन्होंने परियोजनाओं के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकार से नीति समर्थन, भूमि आवंटन और अन्य आवश्यक सहयोग का अनुरोध किया।

धार्मिक पर्यटन की गतिविधियों से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मिल रहा है प्रोत्साहन: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आस्था, श्रद्धा और धार्मिक पर्यटन के लिए किए गए आग्रह के परिणामस्वरूप सभी धार्मिक पर्व और उत्सव, उल्लास एवं उत्साह के साथ मनाए जा रहे हैं। महाकुंभ के क्रम में मध्यप्रदेश के चित्रकूट धाम, उज्जैन, ओरछा, दतिया जैसे धार्मिक स्थानों पर भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शनार्थ पधार रहे हैं। धार्मिक पर्यटन की इन गतिविधियों से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहन मिला है। उज्जैन में ही गत वर्ष 6 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पधारे।

सुप्रभात

आधा सच और आधा झूठ
मिलकर निकला पूरा झूठ।

होता है सच तो सच ही
कैसे कहिए झूठा झूठ।

चेहरे पे इक चेहरा है
यानी तुमने पहना झूठ।

पाँव नहीं थे उसके पर
हमने देखा चलता झूठ।

चूहे जैसा आ आकर
सच को रहा कुतरता झूठ।

ख़तरे में केवल सच है
इनका हो या उनका झूठ।

झूठे सभी सभा में थे
किसका कौन पकड़ता झूठ।

– प्रदीप कान्त

प्रयागराज में सड़क हादसा, 10 लोगों की मौत

● महाकुंभ यात्रियों की बोलेरो-बस टकराई, 19 लोग घायल ● बोलेरो छत्तीसगढ़ और बस एमपी की, मच गया कोहराम

प्रयागराज (एजेंसी)। यूपी के प्रयागराज में शुक्रवार रात करीब ढाई बजे बोलेरो की बस से टक्कर हो गई। हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई, 19 घायल हैं। जान गंवाने वाले सभी लोग बोलेरो में सवार थे। वे छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले से महाकुंभ आ रहे थे। हादसा प्रयागराज-मिर्जापुर हाईवे पर मेजा इलाके में हुआ। घायल हुए 19 लोग बस में सवार थे, जो कि मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के रहने वाले हैं। वे संगम स्नान के बाद वाराणसी जा रहे थे। टक्कर इतनी भीषण थी कि बोलेरो बुरी तरह डैमेज हो गई। श्रद्धालु छिटककर सड़क पर जा गिरे। किसी का हाथ टूटा तो किसी का सिर फट गया।

कई लोग बोलेरो में ही फंस गए। इन्हें निकालने में ढाई घंटे का समय लगा। एसपी यमुनापार विवेक यादव ने बताया- बोलेरो में सभी पुरुष सवार थे। इसकी स्पीड बहुत ज्यादा थी। बस वाले ने ब्रेक लगाया, लेकिन सामने से आ रही बोलेरो बस में सामने से भिड़ गई। मरने वाले कोरबा के दर्री और जांजगीर चांपा जिले के रहने वाले थे। दो परिवार के लोग साथ में आए थे। कमिश्नर तरुण गाबा और डीएम रविंद्र कुमार मांदड़ मौके पर पहुंचे और रेस्क्यू ऑपरेशन का जायजा लिया। घायलों को रामनगर के सिटी हेल्थ सेंटर में भर्ती करवाया गया। शुरुआती इलाज के बाद सभी को स्वरूप रानी हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। वहीं, पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। प्रत्यक्षदर्शी ने बताया- टक्कर की आवाज सुनकर दौड़कर पहुंचे। देखा कि बोलेरो से शव बुरी तरह फंसे हुए थे।

निवेशक महाकुंभ में होगा देश-विदेश से आए उद्यमियों का समागम

भोपाल (नप्र)। भारत का हृदय मध्यप्रदेश, समृद्ध अर्थव्यवस्था, विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर, राज्य सरकार की निवेशक-अनुकूल नीतियों और विशेष प्रोत्साहन योजनाओं के साथ निवेश के असीमित अवसरों की उपलब्धता से देश-विदेश के उद्यमियों के लिए निवेश का प्रमुख स्थल बन गया है। देश-विदेश के उद्यमियों को निवेश के अवसरों से रूबरू कराने के उद्देश्य से राजधानी भोपाल में दो दिवसीय जीआईएस-2025 का आयोजन किया जा रहा है। इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी करेंगे। इस 'महाकुंभ' में दुनिया भर से आने वाले निवेशकों का समागम होगा।

व्यापार और उद्योग अनुकूल माहौल बनाने के लिये प्रतिबद्ध मध्यप्रदेश सभी उद्यमियों के लिए निवेश के अपार अवसर और उसके बाद दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित करने के प्रति संकल्पित है। मध्यप्रदेश पर्यटन, फार्मास्युटिकल्स, ऑटोमोबाइल, खनन, डेयरी और खाद्य प्र-संस्करण जैसे क्षेत्रों के प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है।

बेहतर कनेक्टिविटी और औद्योगिक विकास की असीमित संभावनाएं- मध्यप्रदेश एक्सपोर्ट प्रिपेअर्डनेस इंडेक्स में देश के शीर्ष-10 राज्यों में और विश्व बैंक द्वारा आयोजित ईज़-ऑफ-डूइंग बिज़नेस में चौथे स्थान पर है। दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के प्रभाव क्षेत्र में आने से मध्यप्रदेश में

लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक विकास के असीम अवसर उपलब्ध हैं। मजबूत रेल और सड़क नेटवर्क के अलावा राज्य में 6 व्यावसायिक एयरपोर्ट हैं, जहां से 100 से अधिक उड़ानें संचालित होती हैं। इससे यहां राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आवागमन सुगम हुआ है।

खनिज संसाधन और औद्योगिक समृद्धि- मध्यप्रदेश में कोयला, हीरा, तांबा, लौह अयस्क और ग्रेफाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिज संसाधनों का भण्डार है। प्रदेश तांबा, मैंगनीज, मोलिब्डेनम और हीरे का देश का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। राज्य सरकार कृषि और खाद्य प्र-संस्करण, आईटी, आईटीईएस, पर्यटन, वस्त्र उद्योग, वेयरहाउसिंग एवं लॉजिस्टिक्स, ऑटोमोबाइल, दवाइयां एवं फार्मास्युटिकल्स और रक्षा एवं एयरोस्पेस सेक्टर पर प्रमुखता से ध्यान दे रही है। राज्य में 8 फूड पार्क, लगभग 15 मिलियन मीट्रिक टन की वेयरहाउसिंग क्षमता और 3 लाख 54 हजार वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र कवर करने वाले कोल्ड-स्टोरेज के साथ मध्यप्रदेश उद्योगों के लिए एक आकर्षक निवेश स्थल बनता जा रहा है।

शिक्षा, पर्यटन और हरित क्षेत्र में अग्रणी- मध्यप्रदेश देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। यहां देश भर के सबसे बड़े क्षेत्र में जैविक खेती की जाती है। भारत के कुल जैविक उत्पादन का 27 प्रतिशत मध्यप्रदेश में होता है। भारत के सबसे स्वच्छ राज्य मध्यप्रदेश का इंदौर शहर लगातार देश का सबसे स्वच्छ शहर बना हुआ है और भोपाल स्वच्छतम राजधानी। राज्य की बड़ी जनसंख्या इसे विशाल उपभोक्ता बाजार भी बनाती है।

मध्यप्रदेश में निवेशकों के लिए 1.25 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र की औद्योगिक भूमि-बैंक है। इसमें से 19,011 हेक्टेयर क्षेत्र उद्योगों के लिए पहले ही विकसित किए जा चुके हैं। राज्य में 76 विकसित, 19 विकासाधीन और 13 प्रस्तावित भूमि-बैंक हैं, जो 5 ग्रोथ सेंटर्स में फैले 79 भूखंडों में वितरित हैं।

सड़क नेटवर्क और लॉजिस्टिक्स

मध्यप्रदेश ने अपने सड़क नेटवर्क के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है। राज्य में 5 लाख किलोमीटर से अधिक लंबाई का सड़क नेटवर्क है, जिसमें 46 राष्ट्रीय राजमार्ग शामिल हैं। यह देश के राष्ट्रीय राजमार्गों का 6.6त्न और राज्य-राजमार्गों का लगभग 6.4त्न है। राज्य में प्रतिदिन 550 से अधिक ट्रेनों का संचालन होता है। इसके साथ ही 2,32,344 किलोमीटर लंबी ग्रामीण सड़कों के साथ, मध्यप्रदेश 5वां सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क वाला राज्य है।

राज्य में अटल प्रोग्रेस-वे और नर्मदा एक्सप्रेस-वे के साथ ही दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा, पीथमपुर-धार-महू, रतलाम-नागदा, शाजापुर-देवास, और नीमच-नयागांव जैसे औद्योगिक एवं निवेश क्षेत्रों का निर्माण किया गया है। औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश में 4 निवेश गलियारों का विकास किया जा रहा है। इनमें भोपाल-इंदौर, भोपाल-बीना, जबलपुर-कटनी-सतना-सिंगरौली और मुरैना-ग्वालियर-शिवपुरी-गुना शामिल हैं। मध्यप्रदेश ईज़-ऑफ-डूइंग बिजनेस रैंकिंग में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों में से एक है। यहां व्यापार संचालन और निवेश के लिये माहौल को अत्यधिक अनुकूल बनाया गया है। इसके साथ ही नियामकीय प्रक्रियाओं को अत्यंत सरल किया गया है। इससे आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिल रहा है। प्रदेश में किये गए मुख्य सुधारों में ऑनलाइन पंजीकरण, लाइसेंसिंग और अनुमति स्वीकृति जैसी व्यावसायिक प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और इन्वेस्ट मध्यप्रदेश विंडो प्रमुख हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 16 फरवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब एमसीडी में भी बन सकती है बीजेपी की सरकार

तीन और पार्षदों ने छोड़ा एएपी का साथ, बीजेपी में हुए शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली एमसीडी में अब बीजेपी की सरकार बन सकती है, मेयर भी भाजपा आ सकता है। असल में आम आदमी पार्टी के तीन और पार्षदों ने बीजेपी का दामन थाम लिया है जिस वजह से नंबर गेम पलट गया है और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें बढ़ गई हैं। बीजेपी प्रदेश वीरेंद्र सचदेवा ने तीन आप पार्षदों को पार्टी की सदस्यता दिलवाई है। एंड्रयूज गंज से पार्षद अनीता बसोया, आरके पुरम से पार्षद धर्मवीर और चपराना वार्ड 152 से पार्षद निखिल ने बीजेपी का दामन थामा है। अब जैसा नंबरगेम एमसीडी का चल रहा है, हर बीतते दिन के

साथ आम आदमी पार्टी और बीजेपी के बीच का अंतर भी कम होता जा रहा है। असल में दिल्ली नगर निगम में कुल 250 पार्षद की सीटें हैं, जिसमें से 11 पार्षद सांसद और विधायक बन गए हैं। इस आधार पर नगर निगम में अब निर्वाचित पार्षदों की संख्या 239 बची है। जिसमें से 119 सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के हैं जबकि 113 बीजेपी के हैं। वहीं 7 पार्षद कांग्रेस पार्टी के हैं।

संस्कृति विभाग करेगा रणवीर-रैना मामले की जांच

पुलिस को बंद मिला अलाहबादिया का फ्लैट।

मुंबई (एजेंसी)। यूट्यूबर रणवीर अलाहबादिया के इंडिया गोट लैटेंट शो में दिए विवादित बयान की जांच महाराष्ट्र का संस्कृति विभाग भी करेगा। शुक्रवार को मंत्री आशीष शेलार की अध्यक्षता में संस्कृति विभाग ने रणवीर विवाद की जांच के आदेश दिए। मंत्री ऑफिस के मुताबिक इंडियाज गॉट लैटेंट शो में अश्लीलता के बारे में विभाग को शिकायतें मिली थीं। ऐसे

ही अन्य शो बिना उचित अनुमति के दर्शकों को टिकट देकर चलाए जा रहे हैं। वहीं, शुक्रवार को मुंबई पुलिस (खार स्टेशन) और असम पुलिस को टीमें भी रणवीर के वर्सोवा वाले फ्लैट पर पहुंचीं, लेकिन वो बंद मिला। रणवीर को आज मुंबई पुलिस (खार पुलिस स्टेशन) में पेश होना है। क्योंकि वे शुक्रवार को पेश नहीं हुए। पुलिस अधिकारी ने बताया कि रणवीर को अपने विवादित बयान की जांच के सिलसिले में 13 फरवरी को पुलिस के सामने पेश होने का कहा गया था, लेकिन वे नहीं आए।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव को उज्जैन के संयुक्त चेतना वैश्विक सम्मेलन में 5 महाद्वीपों के 21 से अधिक देशों की विभिन्न नदियों का जल एक घड़े में समाहित किया। वहीं कालिदास संस्कृति अकादमी में संयुक्त चेतना वैश्विक सम्मेलन में पुस्तक 'वैदिक पेरेंटिंग' का विमोचन किया।

23 हजार घरों में गंगाजल का वितरण

भोपाल के 17 वार्डों में घर-घर जाकर दिया, महाकुंभ से टैंकर में भरकर लाया गया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के करीब 23 हजार घरों में शनिवार को गंगा जल वितरित किया गया। नरेला विधानसभा के कुल 17 वार्डों में मंत्री विश्वास सारंग ने गंगा जल का वितरण किया। गंगा जल महाकुंभ से टैंकरों में भरकर भोपाल लाया गया।

मुख्य कार्यक्रम अशोका गार्डन स्थित नर्मदा परिक्रमा पार्क में प्रारंभ हुआ। जहां मंत्री सारंग ने गंगाजल वितरण के लिए विशेष रथों का पूजन-अर्चन कर भगवा ध्वज दिखाकर रवाना किया। मंत्री सारंग ने वार्ड-69 के अशोका गार्डन, वार्ड-37 में द्वारका नगर एवं वार्ड-76 में पहुंचे। अभियान के अंतर्गत नरेला विधानसभा के सभी 17 वार्डों में घर-घर गंगाजल वितरण किया गया, ताकि जो श्रद्धालु प्रयागराज महाकुंभ नहीं जा सके, वे भी इस पवित्र जल का लाभ उठा सकें।

महाकुंभ सनातन आस्था का महापर्व- मंत्री सारंग ने बताया, महाकुंभ हमारे सनातन धर्म का सबसे बड़ा और पवित्र धार्मिक आयोजन है। जिसमें करोड़ों श्रद्धालु देश-विदेश से आकर पुण्यलाभ अर्जित करते हैं। इस महापर्व का महत्व अनादिकाल से स्थापित है। उन्होंने कहा, महाकुंभ के इस पावन अवसर पर प्रयागराज से टैंकर के माध्यम से गंगाजल मंगवाया गया है। विशेषकर उनके लिये जो प्रयागराज महाकुंभ जाने में असमर्थ हैं। इस जल को बोतलों में पैक कर घर-घर निशुल्क वितरित किया जा रहा है।

गंगाजल मिलने पर श्रद्धालु बोले- अशोका गार्डन निवासी आरती बिसेन ने बताया, महाकुंभ हम सभी की आस्था का महापर्व है, लेकिन व्यक्तिगत कारणों से हम प्रयागराज जाने में असमर्थ थे, लेकिन अब हम घर पर ही महाकुंभ का पुण्य अर्जित कर सकेंगे।बैंक कॉलोनी निवासी गायत्री चौबे ने कहा कि, महाकुंभ के पवित्र गंगाजल का घर-घर वितरित करना अति सराहनीय व अनूठी पहल है। कार्यक्रम में भोपाल महापौर मालती राय, स्थानीय जनप्रतिनिधि भी शामिल रहे।

पहली बार समुद्री लहरों से पैदा होगी बिजली

● मुंबई के तट में 100 किलोवाट का पायलट प्रोजेक्ट होगा शुरू ● बीपीसीएल ने की इजराइली कंपनी के साथ साझेदारी की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। बिजली की बढ़ती मांग को पूरा करने और हर स्रोत का पूरा उपयोग करने के लिए देश में पहली बार समुद्री लहरों से बिजली पैदा की जाएगी। केंद्र सरकार के स्वामित्व वाली भारत पेट्रोलियम कंपनी लिमिटेड (बीपीसीएल) ने इसके लिए पहल की है।

इसके तहत इजराइली कंपनी के सहयोग से मुंबई में पहली पायलट

परियोजना स्थापित की जाएगी। दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में चल रहे 'भारत ऊर्जा सप्ताह' का मुख्य उद्देश्य देश की बढ़ती ईंधन और ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्यावरण अनुकूल और स्वच्छ ऊर्जा पर केंद्रित है। इसके तहत बीपीसीएल ने समुद्र जैसे विशाल मात्रा में उपलब्ध नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के माध्यम से बिजली उत्पादन की योजना बनाना शुरू कर दिया है। इसके तहत बीपीसीएल जल्द ही इजरायल की इको वेव पावर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करेगी।

सरकार टेक्नोलॉजी इनोवेशन, शिक्षा, स्वास्थ, अकादमिक और रिसर्च पर फोकस करे

भोपाल। भारत सरकार को टेक्नोलॉजी इनोवेशन, शिक्षा, स्वास्थ, अकादमिक और रिसर्च के क्षेत्र में में विशेष फोकस करना होगा। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय शाखा द्वारा मध्यप्रदेश प्रशासन अकादमी भोपाल में ' केंद्रीय बजट 2025 का प्रशासन पर प्रभाव' विषय पर पर आयोजित विमर्श के दौरान वक्ताओं ने यह विचार प्रकट किये।

विषय प्रवर्तन आई आई पी ए के चेयरमैन और संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे पूर्व आईएएस अधिकारी के.के. सेठी ने किया। विमर्श में स्टार्टअप, एमएसएमई,अंतर्राष्ट्रीय संबंध, आईआईटी, विद्यार्थियों के विश्वविद्यालयीन स्तर की शिक्षा के लिए किये गए बजट प्रावधान पर चर्चा की गई। साथ फ्री बीज की योजनाओं के कारण राज्यों के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव पर संवाद हुआ। वरिष्ठ पत्रकार और डिजिटल मीडिया के जानकार सरमन नगेले ने कहा कि केंद्र सरकार ने 500 करोड़ रूपए के कुल परिव्यय के साथ शिक्षा के लिए एआई-आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में उत्कृष्टता केन्द्र के लिए प्रावधान तो बजट में किया है लेकिन भारत सरकार की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की कोई नीति ही नहीं है। ओटीटी प्लेटफार्म पर फूहड़ता परोसी जा रही है इसके लिए भी कोई नीति नहीं है जबकि कई राज्यों के चीफ मिनिस्टर्स एवं सांसद इसके लिए नियम कायदे बनाने के लिए केंद्र सरकार से लिखकर आग्रह भी कर चुके हैं। केंद्र सरकार को वैश्विक स्तर पर ऑनलाइन एजुकेशन के लिए अपना विज़न लाना चाहिये।विमर्श में छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यसचिव, ए के विजयवर्गीय, मध्यप्रदेश के पूर्व डीजीपी अरुण गुर्टू, एससी त्रिपाठी, एसके राऊत। पूर्व अपर मुख्यसचिव,मध्यप्रदेश जे.एल. बोस , पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, नरेंद्र प्रसाद, डीपी तिवारी,केसी श्रीवास्तव, जीपी.दुबे, विवेक गुप्ता ,एसएन डागा, अमोद कुमार गुप्ता ,सीके हयारण,राजीव सक्सेना समेत अनेक पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

दूल्हे की घोड़ी पर बैठे-बैठे मौत

श्योपुर में बारात लेकर मंडप पहुंचा था, तोरण मारने के बाद डीजे पर किया डांस

श्योपुर (नप्र)। श्योपुर में घोड़ी पर बैठे दूल्हे की अचानक मौत हो गई। वह घोड़ी पर सवार होकर बारात लेकर दुल्हन के घर पहुंचा था। वहां परंपरागत स्वागत के बाद उसने दरवाजे पर तोरण मारा। फिर डीजे की धुन पर डांस करने लगा। दोबारा वह घोड़ी पर बैठा तो कुछ देर बाद गिर पड़ा। घटना शुक्रवार रात करीब 11 बजे की है।

प्रदीप जाट (27) की बारात जाट छात्रावास पहुंची थी। शुरुआत में लोगों को लगा कि वह डांस करने से थक गया है, लेकिन घोड़ी पर बैठे-बैठे उसकी हालत गंभीर हो गई। बारातियों ने उसे तुरंत घोड़ी से उतारा और सीपीआर देने का प्रयास किया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। परिजन और बाराती तत्काल उसे अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। अटैक का मामला बताया जा रहा है।

भोपाल में महिला से 8.50 लाख की लूट का खुलासा

नशे और शौक के लिए वारदात कर यूपी-राजस्थान में उड़ाए पैसे, दो गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मालवीय नगर में 1 महीने पहले महिला से हुई लूट के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उनके कब्जे से लूटी गई 8 लाख रुपए की ज्वेलरी सहित घटना में प्रयुक्त बाइक जब्त कर ली है।

पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि, नशे की लत और मंहगे खर्च पूरा करने के लिए लूट की थी। लूट की रकम से उन्होंने यूपी और राजस्थान के टूरिस्ट प्लेस घूमे हैं। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने एसआईटी का गठन किया था। एसआईटी ने पांच दिन में चोरों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि, 15 जनवरी को कैलाश तनवानी ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि, उनकी पत्नी संगीता तनवानी, बहन सुजाता लखानी के साथ न्यूमार्केट घूमने गयी थी। ज्वैलर्स की दुकान से गोल्ड रिपेयर कराकर लौट रही थी। इस दौरान बाइक से आए दो युवकों ने संगीता के हाथ से ज्वेलरी और पैसों का बैग छीन कर भाग गए। आसपास के लोगों ने पीछा किया, पर आरोपियों का कहीं पता नहीं चला।

सिंगरौली में हालात सामान्य,मृतकों के परिवार को 8-8 लाख रुपए और नौकरी मिलेगी

सिंगरौली (नप्र)। सिंगरौली में शुक्रवार शाम हुए सड़क हादसे के बाद शनिवार को स्थिति सामान्य हो गई। दोनों मृतकों का पोस्टमॉर्टम 20 घंटे बाद वैढ़न के ट्रॉमा सेंटर में किया गया। एडिशनल कलेक्टर पी.के. सेनगुप्ता ने बताया कि मृतकों के परिवारों को कंपनी की तरफ से प्रति परिवार एक सदस्य को नौकरी दी जाएगी। साथ ही कोल ट्रांसपोर्ट कंपनी की ओर से 4 लाख रुपए और कर्मकार मंडल योजना के तहत 4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

नौ राज्यों में प्रभारी नियुक्त दो राज्य में नए महासचिव

चुनावी हार के बाद फिर ऐक्शन में आई कांग्रेस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस की दिल्ली में करारी हार हुई। अब पार्टी ने अपने संगठन में बड़ा बदलाव किया है। बदलाव में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की छाप दिखाई दी। कांग्रेस ने दो राज्यों के लिए महासचिव और 9 राज्यों के लिए प्रभारी नियुक्त किए। वहीं इन पदों पर काम कर रहे 6 नेताओं को हटा दिया। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को एआईसीसी महासचिव

बनाया और उन्हें पंजाब का महासचिव भी नियुक्त किया। राज्यसभा सांसद सैयद नसीर हुसैन को जम्मू-कश्मीर और लद्दाख का प्रभारी महासचिव बनाया गया। भूपेश बघेल ने देवेंद्र यादव की जगह ली, जिन्होंने पिछले साल दिल्ली कांग्रेस प्रमुख नियुक्त होने के बाद भी पंजाब का प्रभार संभाला था। वहीं नासिर हुसैन ने गुजरात के नेता भरत सिंह सोलंकी की जगह जम्मू-कश्मीर के प्रभारी महासचिव के रूप में काम किया। नई नियुक्तियों में से अधिकांश या तो विपक्ष के नेता राहुल गांधी या एआईसीसी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के करीबी हैं। जैसे भूपेश बघेल के प्रियंका के साथ अच्छे संबंध हैं। हालांकि नासिर हुसैन कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे के करीबी माने जाते हैं।

पश्चिमी देशों का लोकतंत्र पर है दो तरह का स्टैंडर्ड

जयशंकर बोले-लोकतंत्र को खुद का सिस्टम मानते हैं

कहा-दूसरे देशों में तानाशाही ताकतों को बढ़ावा दिया

म्यूनिख (एजेंसी)। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर शुक्रवार को जर्मनी के म्यूनिख में आयोजित सिक्योरिटी कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने लोकतंत्र पर पश्चिमी देशों के डबल स्टैंडर्ड पर सवाल उठाया। जयशंकर ने कहा कि पश्चिमी देश लोकतंत्र को अपने यहां की व्यवस्था मानते हैं और ग्लोबल साउथ के देशों में गैर-लोकतांत्रिक ताकतों को बढ़ावा देते हैं। जयशंकर से पूछा गया कि क्या दुनिया भर में लोकतंत्र खतरे में है। इसके जवाब में उन्होंने उंगली पर लगी स्याही दिखाते हुए कहा कि हमारे लिए लोकतंत्र सिर्फ एक थ्योरी नहीं, बल्कि एक डिलीवर किया हुआ वादा है। हम अपने लोकतंत्र को लेकर आशावादी। भारतीय विदेश मंत्री ने कहा- भारत ऐतिहासिक रूप से खुला समाज रहा है और चुनौतियों के बावजूद हम लोकतंत्र के लिए ईमानदारी से समर्पित रहे हैं। भारतीय विदेश मंत्री ने कहा कि आप मेरे नाखून पर स्याही देख रहे हैं, क्योंकि हमारे राज्य दिल्ली में अभी चुनाव हुए हैं।

एमपी टूरिज्म बोर्ड को प्रोजेक्ट क्लीन डेस्टिनेशन के लिए मिला स्कॉच अवॉर्ड-2024

अपर प्रबंध संचालक सुश्री बिदिशा मुखर्जी ने ग्रहण किया अवार्ड

भोपाल (नप्र)। एमपी टूरिज्म बोर्ड को उसके सतत पर्यटन पहल 'प्रोजेक्ट क्लीन डेस्टिनेशंस' के लिए प्रतिष्ठित एसकेओसीएच अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति एवं प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने हर्ष जताते हुए कहा कि एमपीटीबी सतत और जिम्मेदार पर्यटन के प्रति प्रतिबद्ध है। हम सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से मध्यप्रदेश को स्वच्छ, हरित और सुरक्षित बनाने के सतत प्रयास कर रहे है। यह अवॉर्ड परियोजना को क्रियान्वित कर रहे सभी हितधारको और अधिकारियों का हौसला बढ़ाएगा। अपर प्रबंध संचालक सुश्री बिदिशा मुखर्जी ने नई दिल्ली में सिल्वर ओक हॉल, इंडिया हैबिटेट सेंटर में 100वें स्कॉच समिट के दौरान अवार्ड ग्रहण किया। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड भोपाल द्वारा प्रोजेक्ट क्लीन डेस्टिनेशन का शुभारम्भ फरवरी 2022 में राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल द्वारा पन्ना जिले से किया गया है। इस परियोजना को कोका-कोला इंडिया लिमिटेड द्वारा वित्त पोषित किया गया है और इसे साहस संगठन द्वारा क्रियान्वित किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य ठोस कचरा प्रबंधन, पर्यावरणीय स्थिरता और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना है। यह पहल स्वच्छता, आगंतुक जागरूकता और राजस्व-साझाकरण मॉडल को सुनिश्चित करती है, जिससे स्थानीय संस्थानों को सशक्त बनाया जा सके।यह परियोजना पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के पास स्थित 30 गांवों में सफलतापूर्वक लागू की गई है। पन्ना में मिली सफलता के बाद, एमपीटीबी ने इस पहल का विस्तार बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व और इसके आसपास के 16 गांवों में कर दिया है।

दिल्ली के बाद बिहार का दंगल, शुरू हुई तैयारी !

साल के आखिरी में होंगे विधानसभा चुनाव,राजनीतिक दलों ने कसी कमर

लालू की ललकार,तेजस्वी की यात्राएं और नीतिश की योजनाएं करेंगी खेला

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में साल के आखिरी में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। राजनीतिक दल तैयारी में जुट गए हैं। हर दल अपने-अपने तरीके से अभियान में जुटा हुआ है। सभी दलों के प्रमुख नेता बिहार यात्रा पर निकले हुए हैं और कार्यकर्ताओं से अलग-अलग विधानसभा क्षेत्र में मुलाकात कर रहे हैं। आरजेडी नेता तेजस्वी यादव पूरा बिहार घूम रहे हैं तो वहीं सीपीआई (एमएल) के नेता भी अलग-अलग जिलों में घूम रहे हैं। विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख मुकेश सहनी निषाद आरक्षण यात्रा निकाल रहे हैं। तो वहीं नीतिश

कुमार भी प्रगति यात्रा के जरिए नब्ज जानने का कोशिश कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता गिरिराज सिंह ने भी हिंदू स्वाभिमान यात्रा निकाली थी। लेकिन सबसे अहम बात यह है कि महागठबंधन में एनडीए जैसा साझा प्रयास नहीं दिख रहा है। हालांकि महागठबंधन का मकसद है कि एनडीए को सत्ता से दूर हटाना। कांग्रेस भी बिहार में जोर लगा रही है और अपने संगठन को मजबूत करने पर ध्यान दे रही है। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार 16 फरवरी को दिल्ली दौरे पर जा रहे हैं। इस दौरान वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी मुलाकात कर सकते हैं। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 24 फरवरी को बिहार के भागलपुर दौरे पर रहेंगे। नीतिश कुमार अपनी प्रगति यात्रा के दौरान कई घोषणाओं का भी ऐलान कर रहे हैं।

जम्मू और कश्मीर में तीन सरकारी कर्मचारी बर्खास्त

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू और कश्मीर के एलजी मनोज सिन्हा ने तीन सरकारी कर्मचारियों को आतंकवाद संबंधी गतिविधियों के आरोप में बर्खास्त किया है। इन कर्मचारियों में एक पुलिस कांस्टेबल, एक शिक्षक और एक वन विभाग का कर्मचारी शामिल हैं। आरोप है कि इन तीनों पर आतंकी गतिविधियों में हथियारों का इंतजाम करना, आतंकी हमलों के लिए निशाने बताना और घाटी में हिंसक विरोध प्रदर्शन भड़काना शामिल है। ये सब काम पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में बैठे आकाओं के इशारे पर किया गया। निकाले गए तीन कर्मचारियों में पुलिस कांस्टेबल फिरदौस अहमद भट, टीचर मोहम्मद अशरफ भट और वन विभाग का कर्मचारी निसार अहमद खान शामिल हैं।

परिक्रमा

वैश्विक स्तर पर 'मोदी' और प्रादेशिक फलक पर डंका बजाते 'मोहन'

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

एक ओर जहां अमेरिका सहित वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का डंका बज रहा है तो वहीं प्रदेश के फलक पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव प्रदेश को औद्योगिक हब बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और मुख्यमंत्री को पक्का भरोसा है कि उद्योगों के प्रति मित्रवत नीति एवं नवाचार से प्रदेश में निवेश के विस्तार को पंख लग जायेंगे और यह एक नया औद्योगिक हब बनेगा। अभी तक मध्यप्रदेश की औद्योगिक और आर्थिक राजधानी के रुप में इंदौर तथा संस्कारधानी के रुप में जबलपुर की पहचान थी, अब औद्योगिक राजधानी के रुप में ताल-तलैयों व शैल-शिखरों की नगरी भोपाल को भी एक नई पहचान मिलने जा रही है। इन प्रयासों को जमीनी धरातल पर उतारने में डॉ. यादव महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की व्हाइट हाउस में बड़े ही गर्मजोशी के साथ मुलाकात हुई और न केवल दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया बल्कि ट्रम्प ने यह भी माना कि उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को मिस किया है। टेरिफ मामले को लेकर मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने मोदी को एक टफ नेगोशिएटर निरुपित किया। इस अवसर हुई बैठक में भारत-अमेरिका व्यापार, रक्षा सहयोग और आतंकवाद विरोधी रणनीति के साथ ही साथ ऊर्जा साझेदारी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि दोनों देशों ने अगले पांच वर्षों में आपसी व्यापार को दोगुना करने का लक्ष्य रखा और रणनीतिक साझेदारी को और अधिक मजबूत धरातल पर उतारने के मामले में अपनी सहमति जताई। अमेरिका और भारत ने इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ मिलकर काम करने का फैसला किया है और दोनों देशों ने आतंकवादी संगठनों के वित्त पोषण को रोकने, खुफिया जानकारी साझा करने, वैश्विक आतंकवाद को राकने में सहयोग बढ़ाने की बात कही। ट्रम्प का कहना था कि कट्टरपंथी आतंकवाद पूरी दुनिया के लिए खतरा है और इसे रोकने के लिए दोनों देशों का गठबंधन महत्वपूर्ण होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की कि अमेरिका में भारतीय समुदाय की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए लॉस एंजिलिस और बॉस्टन में नये भारतीय वाणिज्य दूतावास खोले जायेंगे। इससे भारतीय प्रवासियों को कांसुलर सेवाओं का लाभ मिलेगा और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और व्यावसायिक संबंध और मजबूत होंगे।

अडानी मामले में मोदी-राहुल आमने-सामने

अमेरिका में अडानी समूह को लेकर पूछे गये सवाल पर मोदी ने जो उत्तर दिया उसको लेकर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि देश में सवाल पूछो तो चुप्पी और विदेश में पूछो तो निजी मामला। अमेरिका में भी पीएम मोदी ने अडानी के

भ्रष्टाचार पर पर्दा डाल दिया। जब मित्र की जेब भरना मोदी के लिए राष्ट्र निर्माण है तब रिश्वतखोरी और देश की सम्पत्ति को लूटना व्यक्तिगत मामला बन जाता है। अमेरिका में जब मीडिया के सामने ट्रम्प और मोदी रुबरु हो रहे थे उस समय अडानी समूह को लेकर अमेरिका में चल रहे विवाद पर सवाल किया गया कि क्या अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के साथ कारोबारी गौतम अडानी के खिलाफ मामले पर चर्चा हुई है, तब मोदी का उत्तर था कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की है, दुनिया को हम एक परिवार मानते हैं, हर भारतीय को भी मैं अपना मानता हूं, ऐसे व्यक्तिगत मामलों के लिए दो देशों के मुखिया न मिलते हैं न बैठते हैं न बात करते हैं।

न्यायिक अकादमी में धनखड़

न्यायिक अकादमी में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने साफतौर पर कहा कि हम एक सम्प्रभु राष्ट्र हैं, हमारी सम्प्रभुता लोगों में निहित है। लोगों द्वारा दिया गया संविधान इस सम्प्रभुता को अभेद्य बनाता है। किसी भी कार्यकारी नियुक्ति में भारत के मुख्य न्यायाधीश को कैसे शामिल कर सकते हैं, हमारे देश में या किसी भी लोकतंत्र में क्या

कोई कानूनी तर्क हो सकता है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश को सीबीआई निदेशक के चयन में भागीदारी करनी चाहिये। क्या इसके लिए कोई कानूनी आधार हो सकता है? मैं समझ सकता हूं कि यह विधायी प्रावधान इसलिए अस्तित्व में आया कि उस समय की कार्यकारी सरकार ने न्यायिक निर्णय को स्वीकार किया, लेकिन अब समय आ गया है कि इसे फिर से देखा जाए। धनखड़ का कहना था कि हमारा संविधान सामंजस्य और सहकारी दृष्टिकोण की कल्पना करता है, न्यायिक सम्मान और विनम्रता यह मांग करती है कि ये संस्थाएं परिभाषित संवैधानिक सीमाओं के भीतर काम करें। आपस में संवाद बनाये रखें और राष्ट्रहित को हमेशा ध्यान में रखें। जब कार्यकारी भूमिकायें चुनी हुई सरकारों द्वारा निभायी जाती हैं तो जवाबदेही लागू होती है, सरकारें विधायिका के प्रति उत्तरदायी हैं।

और यह भी

देश और प्रदेश में कांग्रेस अब पीढ़ी परिवर्तन के दौर में प्रवेश कर रही है और युवा चेहरों को तवज्जो मिल रही है। इसका मतलब यह नहीं है कि अनुभव की उपेक्षा होगी। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को महामंत्री बना दिया गया है जबकि युवा चेहरों में मध्यप्रदेश के कुणाल चौधरी, प्रियव्रत सिंह, मीनाक्षी नटराजन और विक्रान्त भूरिया को भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां मिली हैं। पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल, ओमकार सिंह मरकाम, कुणाल चौधरी राष्ट्रीय फलक पर विभिन्न जिम्मेदारियां संभाल ही रहे थे कि वहीं अब हाल ही में मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष विधायक डॉ. विक्रान्त भूरिया को अखिल भारतीय आदिवासी कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया है। दिल्ली के विधानसभा चुनाव में भी पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन छानबीन समिति मे थीं और वहीं पूर्व विधायक प्रियव्रत सिंह वाररुम की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। मध्यप्रदेश में प्रस्तावित ब्लाक व जिला इकाइयों में भी पचास प्रतिशत पद युवाओं को देने की तैयारी चल रही है। विधानसभा चुनाव में हारने और लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के एक प्रकार से सफाये के बाद अब पूरा फोकस संगठन को मजबूत करने की ओर हो रहा है। प्रदेश के युवाओं को राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने का अवसर दिया जा रहा है। आदिवासी वर्ग से आने वाले कांग्रेस के विधायक ओमकार सिंह मरकाम केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य हैं। पिछड़े वर्ग से आने वाले कमलेश्वर पटेल राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं और कुणाल चौधरी राष्ट्रीय सचिव पद की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। दिल्ली के विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री विधायक सचिन यादव को पर्यवेक्षक बनाकर भेजा गया था। विधानसभा चुनाव के बाद जीतू पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष और उमंग सिंघार को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के साथ हेमंत कटारे को उपनेता प्रतिपक्ष बनाया गया। यह सब कांग्रेस में पीढ़ी परिवर्तन का परिचायक माना जा रहा है।

पिपलानी स्थित स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी

तेलुगु भाषा में मेल किया, स्कूल खाली कराया पुलिस और एटीएस ने ली तलाशी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पिपलानी में स्थित एक स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। धमकी देने वाले ने ऑफिशियल ईमेल आईडी पर बिल्डिंग को आईईडी ब्लास्ट से उड़ाने की चेतावनी दी।

मामला शनिवार सुबह 10.30 बजे हरमन माइनर स्कूल का है। आज स्कूल की छुट्टी थी, लेकिन स्टाफ के कुछ सदस्य और कुछ छात्रों के परिजन मीटिंग के लिए मौजूद थे। धमकी मिलने के बाद तुरंत ही वे बाहर निकल गए और पुलिस को सूचना दी।

स्कूल के हर कोने की हुई तलाशी- मौके पर पहुंची पुलिस ने बीडी (बॉम्ब डिस्पोजल) और डीएस (डॉग स्क्वायड) की टीम के साथ स्कूल की सघन तलाशी शुरू कर दी। इसके अलावा, एटीएस (एंटी टेरर स्क्वायड) की टीम भी जांच के लिए पहुंची। थाना प्रभारी (टीआई) अनुराग लाल ने बताया कि स्कूल के कोने-कोने की तलाशी ली गई, लेकिन कोई संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई।

मेल करने वाले का आईपी एड्रेस खंगाला- पुलिस को जानकारी मिली कि दो दिन पहले ही दिल्ली से स्कूल में किताबों का एक पार्सल आया था। इसे भी संदेह के आधार पर बीडी और डीएस की टीम ने खोलकर जांच की, लेकिन उसमें सिर्फ किताबें निकलीं। अब मेल भेजने वाले व्यक्ति की पहचान के लिए साइबर एक्सपर्ट्स उसकी आईपी एड्रेस ट्रेस कर रहे हैं, ताकि आरोपी तक पहुंचा जा सके।

तेलुगु भाषा में था मेल, स्टाफ ने किया ट्रांसलेट- धमकी भरा मेल तेलुगु भाषा में लिखा गया था। स्कूल स्टाफ में मौजूद एक व्यक्ति को तेलुगु भाषा आती थी, उसने मेल को ट्रांसलेट कर इसकी जानकारी अन्य स्टाफ को दी। इसके बाद तुरंत स्कूल खाली कराया गया। उस समय वहां करीब 50 लोग मौजूद थे। स्कूल की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

हेड कॉन्स्टेबल की बेटी पांचवीं मंजिल से गिरी, मौत

रेडियो कॉलोनी में रहती थी बीकॉम की छात्रा,

भोपाल (नप्र)। भोपाल की रेडियो कॉलोनी में रहने वाली बी.कॉम स्टूडेंट की पांचवी मंजिल से संदिग्ध हालत में गिरने से मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। हादसा शुक्रवार शाम का बताया जा रहा है। शनिवार दोपहर को पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई है।

प्रधान आरक्षक जसवंत सिंह ने बताया कि संध्या शाक्य (20)

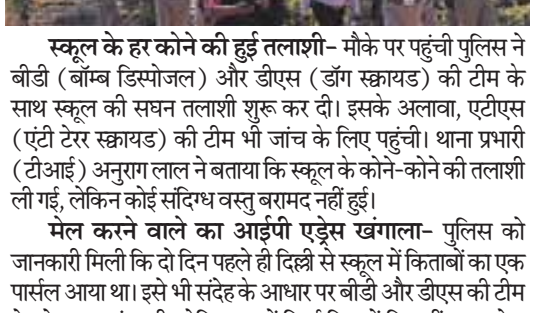

पुत्री राजेश शाक्य रेडियो कॉलोनी में पांच मंजिल बिल्डिंग के एक फ्लैट में रहती थी। शुक्रवार शाम करीब 7-30 बजे घर में अकेली थी। भाई निजी काम से रातीबड़ गया हुआ था। पिता और मां फलदान कार्यक्रम में नेहरू नगर में रहने वाले रिश्तेदार के घर गए थे। इसी बीच लड़की संदिग्ध हालात में पांचवी मंजिल से गिर गई। उसके पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। लड़की का मोबाइल फोन उसके भाई ने सुपुर्द किया है। जिसकी जांच कराई जाएगी।

प्रधान आरक्षक हैं पिता- मृतका के पिता पीटीएस एचटी शाखा में प्रधान आरक्षक हैं। संध्या निजी कॉलेज में बी.कॉम फाइनल ईयर की स्टूडेंट थी। परिजनों ने पुलिस को बताया कि उसने कभी किसी प्रकार के तनाव की बात नहीं बताई।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट

मेहमान करेंगे एशियाटिक लॉयन का दीदार

वन विहार में पहली बार बाड़े में छोड़े गए शेर, गुजरात के जूनागढ़ से आया जोड़ा

भोपाल (नप्र)। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) में आए देसी-विदेशी मेहमान भोपाल में एशियाटिक सिंह भी देख सकेंगे। 24-25 फरवरी को होने वाली जीआईएस के चलते सिंह के जोड़े को शनिवार सुबह बाड़े में छोड़ दिया गया। हाउस से बाड़े में जाते ही सिंह का यह जोड़ा मस्ती करने लगा। दोनों को एक ही बाड़े में छोड़ा गया है। यह जोड़ा गुजरात के जूनागढ़ से दिसंबर में लाया गया था। नर सिंह का नाम 'जूना' और मादा सिंह का नाम 'गिरी' है।

समिट मानव संग्रहालय में हो रही है। वन विहार इससे सटा हुआ है। इसलिए मेहमानों को वन विहार में भी घुमाया जाएगा। पहली बार वे सिंह के जोड़े को देख सकेंगे। बता दें कि, समिट में 20 हजार से अधिक उद्योगपति आ रहे हैं। इनमें अडाणी-अंबानी, बिड़ला, महिंद्रा जैसे शीर्ष उद्योगपति भी शामिल हैं। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समिट का उद्घाटन करेंगे, जबकि समापन मौके पर गृह मंत्री अमित शाह आएंगे।

मेहमानों के साथ भोपाल के लोग भी देख सकेंगे

भोपाल के वन विहार नेशनल पार्क में लोग ही एशियाई शेरों के दीदार कर सकेंगे। इन्हें 21 दिन की क्वारेंटाइन अवधि के लिए हाउस में रखा गया था। क्वारेंटाइन की अवधि तीन गुना हो गई थी। वन विहार के डायरेक्टर अवधेश मीना ने बताया, दोनों ही सिंह पूर्णतः स्वस्थ्य हैं। इसलिए उन्हें अब बाड़े में छोड़ा गया है। अब टूरिस्ट इनके दीदार कर सकते हैं।

पांच हो गई लॉयन की संख्या

वन विहार में पहले 3 शेर थे। जिनमें सत्या, गंगा और नदी शामिल हैं। नंदी और सत्या नंदन कानन चिड़ियाघर से लाए गए थे। अब 2 लॉयन और आ गए। इसके बाद यहां 2 नर और 3 मादा शेर हो गई हैं।

जूनागढ़ से 21 दिसंबर को लाए थे

गुजरात के जूनागढ़ से एशियाई शेरों का जोड़ा 21 दिसंबर को भोपाल लाया गया था। उन्होंने 5 दिन में 1000किमी का सफर तय किया था। इसके बाद इन्हें 21 दिन तक क्वारेंटाइन रखा गया था। 11 जनवरी को यह अवधि पूरी हो गई। हालांकि, उनकी सेहत को देखते हुए इन्हें ज्यादा समय तक यहां रखा गया। करीब पौने दो महीने के बाद इन्हें अब बाड़े में छोड़ा जाएगा।

3 साल है दोनों शेर की उम्र

बता दें कि, नर और मादा शेर की उम्र करीब 3 साल है। पहले दिन पिंजरा खुलते ही शेरों ने अपने बाड़े में छलांग लगा दी थी। हालांकि, पहले वे थोड़े डरे-सहमे नजर आए थे लेकिन फिर इधर-उधर मंडराने लगे। खाने के लिए उन्हें मीट भी दिया गया। इसके बाद वे माहौल में ढल गए हैं।

गुजरात गई थी वन विहार की टीम

वन विहार का 9 सदस्यीय दल 17 दिसंबर को जूनागढ़ के सक्करबाग चिड़ियाघर में शेर को लेने पहुंचे थे, जो 21 दिसंबर की शाम को भोपाल पहुंच गए थे। इस टीम में वन विहार के इकाई प्रभारी पर्यटन एव सहायक वन्यप्राणी चिकित्सक भी शामिल थे।

दैनिक वेतनभोगी निकला प्राइवेट बैंक-ट्रैवल्स कंपनी का मालिक

ईओडब्ल्यू ने मंडला में घर-ऑफिस में छापा मारा, 3 करोड़ से ज्यादा की प्रॉपर्टी मिली

मंडला (नप्र)। मंडला जिले के नगर परिषद बिछिया का दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी शिव झरिया 3 करोड़ 10 लाख की संपत्ति का मालिक निकला। जबलपुर की आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ शाखा (ईओडब्ल्यू) ने शनिवार सुबह 6 बजे झरिया के घर और ऑफिस में छापा मारा था। टीम 9 घंटे बाद भी यहां मौजूद है। आय से अधिक संपत्ति को लेकर कार्रवाई की गई है।

ईओडब्ल्यू जबलपुर के डीएसपी एव्ही सिंह ने बताया, शिव झरिया के ठिकानों से तीन प्लॉट और दो मकान के दस्तावेज मिले हैं। बैंक पासबुक और कुछ एफडी भी मिली हैं। उसके मंडला में ही 4 ऑफिस हैं। वह शिवंशी इंडिया निधि लिमिटेड बैंक (माइक्रो फाइनेंस) और ट्रैवल्स कंपनी का संचालन करता है। झरिया की चार गाड़ियां चलती हैं। इनमें एक गाड़ी उसके खुद के और तीन गाड़ियां उसके भाई के नाम से हैं। एक कार दिल्ली में चलती है।

ईओडब्ल्यू के 4 डीएसपी, 4 इंस्पेक्टर, 1 एसआई सहित 17 सदस्यीय टीम सुबह करीब 6 बजे शिव झरिया के ठिकानों पर पहुंची थी। प्रशासन के दो राजपत्रित अधिकारी, एक डॉक्टर समेत मेडिकल टीम और जिला पुलिस बल मौजूद रहा। बता दें कि शिव झरिया 37 लाख रुपए के गबन मामले में जमानत पर है।

मप्र में बिना पीओएस नहीं बिकेगी शराब, लगेगा जुर्माना

नई आबकारी नीति जारी, बंद दुकानों की भरपाई के लिए जिले की दूसरी दुकानों की बढ़ेगी कीमतें

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 19 पवित्र शहरों और गांवों में शराब दुकानों को एक अप्रैल से बंद किया जाएगा। उनसे होने वाली आय की भरपाई के लिए सरकार संबंधित जिले की बाकी दुकानों में 25 फीसदी तक की वृद्धि करेगी। साथ ही, आबकारी विभाग ने पाइंट ऑफ सेल (पीओएस) मशीनों से ही शराब की बिक्री के निर्देश दिए हैं। रेस्तरां में ओपन एरिया में बिकने वाली शराब के लिए भी फ्लोर एरिया बढ़ाने की सहमति दी गई है। विभाग ने कमर्शियल आयोजनों के लिए भी व्यक्तियों की संख्या के आधार पर लाइसेंस फीस तय की है।

ई-बैंक गारंटी की वैधता 30 अप्रैल 2026 तक- एक अप्रैल से लागू होने वाली नई आबकारी नीति में शराब दुकानों के लिए लाइसेंस लेने वाले ठेकेदारों को बैंक गारंटी सिर्फ ई-बैंक गारंटी के रूप में ही मिलेगी। इसके माध्यम से ही शराब दुकानों का आवंटन किया जा सकेगा।

नई आबकारी नीति जारी करते हुए आबकारी विभाग ने कहा है कि ई-बैंक गारंटी को लेकर ठेकेदार से प्रमाणित दस्तावेज भी लिए जाएंगे कि ई-बैंक गारंटी पर पहला हक उस ठेके के लिए होगा जो ठेकेदार को मिलेगा। यह बैंक गारंटी सिर्फ साइबर ट्रेजरी के माध्यम से जमा ई चालान या स्वीकार्य बैंकों की ई-गारंटी के रूप में मंजूर की जाएगी।

पवित्र शहरों और गांवों के लिए भी बताए प्रावधान- आबकारी नीति में प्रदेश के पवित्र शहरों और गांवों की शराब दुकानों को बंद किए जाने के बाद सरकार ने उसकी भरपाई के लिए विकल्प तैयार किए हैं। इसमें कहा है कि अगर किसी शराब दुकान का वार्षिक मूल्य 500 करोड़ रुपए है और इनमें से बंद की जाने वाली शराब दुकानों का वर्ष 2024-25 का वार्षिक मूल्य 100 करोड़ रुपए है तो ऐसी स्थिति में शेष वार्षिक मूल्य 400 करोड़ रुपए की शराब दुकानों के रिजर्व मूल्य की गणना नए फॉर्मूले के आधार पर की जाएगी। फॉर्मूले में कहा है कि बंद की जाने वाली दुकान के वर्ष 2024-25 के कुल वार्षिक मूल्य का जिले की शेष शराब दुकानों के इसी वर्ष के कुल वार्षिक मूल्य का प्रतिशत निकाला जाएगा जो 25 प्रतिशत होगा। विभाग ने इसे उदाहरण के साथ समझाते हुए कहा है कि अगर किसी दुकान का वर्ष 2024-25 में वार्षिक मूल्य 10 करोड़ रुपए है तो वर्ष 2024-25 के वार्षिक आधार मूल्य में 20 प्रतिशत वृद्धि कर उसका अंतरिम रिजर्व मूल्य निकाला जाएगा।

सीबीएसई 10वीं-12वीं बोर्ड की परीक्षाएं शुरू

भोपाल के 36 सेंटर पर शामिल हुए छात्र, अंग्रेजी का पर्चा देख बोले- यह बहुत आसान हमें मुश्किल की उम्मीद थी

भोपाल (नप्र)। सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) की 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं शनिवार, 15 फरवरी सुबह से शुरू हो गई है। मध्यप्रदेश में यह परीक्षा 493 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जा रही हैं, जबकि राजधानी भोपाल में 36 केंद्र बनाए गए

हैं। इनमें भोपाल के 105 स्कूलों के विद्यार्थी परीक्षा देने पहुंचे। प्रदेशभर में 10वीं के 1.17 लाख और 12वीं के करीब 78 हजार विद्यार्थियों ने परीक्षा में शामिल होने के लिए फॉर्म भरा था।

पहला पेपर इंग्लिश का था, परीक्षा सुबह 10.30 से दोपहर 1.30 बजे तक

10वीं बोर्ड की परीक्षा का पहला पेपर इंग्लिश का हुआ। परीक्षा का समय सुबह 10.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक निर्धारित किया गया था। परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र पर सुबह 10 बजे से पहले रिपोर्ट करना था। सुबह 10 बजे के बाद किसी भी छात्र को प्रवेश नहीं दिया गया।

छात्र बोले- पेपर आसान था

छात्र रुद्रांश ने बताया कि पेपर बहुत आसान था, मैंने सैंपल पेपर से भी पढ़ाई की थी, तो मुझे थोड़े मुश्किल पेपर की उम्मीद थी। इसके अलावा अदिति सिंह भदौरिया ने बताया कि पेपर काफी आसान था, हमारा बहुत अच्छा पेपर गया है।

परीक्षा के लिए विशेष दिशा निर्देश

यूनिफॉर्म अनिवार्य- परीक्षार्थियों को अपने स्कूल की निर्धारित यूनिफॉर्म में परीक्षा केंद्र आना होगा।

आईडी कार्ड और एडमिट कार्ड अनिवार्य- छात्रों को परीक्षा में शामिल होने के लिए स्कूल आईडी कार्ड और एडमिट कार्ड लाना आवश्यक है।

इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस वर्जित- मोबाइल फोन, स्मार्ट वॉच और अन्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस परीक्षा केंद्र में ले जाना प्रतिबंधित है। यदि कोई छात्र इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस लाता है, तो उसकी परीक्षा रद्द की जा सकती है।

पारदर्शी पाउच अनिवार्य- परीक्षार्थी पेन, पेंसिल आदि के लिए केवल पारदर्शी पाउच का उपयोग कर सकते हैं। पानी की बोतल भी पारदर्शी होनी चाहिए।

अन्य प्रतिबंध- परीक्षा केंद्र में कोई भी कागज, पर्ची या प्रिंटेड सामग्री ले जाना सख्त मना है।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

बच्चों के लिए प्रेरणादायक है बाल कविता संग्रह

बचपन वह कोमल अवस्था होती है जब बच्चे अपने आसपास के लोगों से गहराई से प्रभावित होते हैं। वे उन व्यक्तित्वों को अपना आदर्श मानते हैं, जो साहस, नैतिकता और परोपकार के प्रतीक होते हैं। बच्चों के सुपरमैन एक ऐसा साझा बाल कविता संग्रह है, जो बच्चों को उनके सच्चे नायकों से परिचित कराने का प्रयास करता है। इस पुस्तक का संपादन सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सुरेश सौरभ और श्री रमाकांत चौधरी ने किया है। बाल साहित्य की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाते हुए यह संग्रह उन महापुरुषों की गाथाओं को बाल गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जिन्होंने भारतीय समाज को नई दिशा दी।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उन महान विभूतियों से परिचित कराना है, जिन्होंने अपने जीवन को देश, समाज और मानवता की सेवा में समर्पित किया। बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए, इस संकलन में महात्मा बुद्ध, सुभाष चंद्र बोस, बिरसा मुंडा, लाल बहादुर शास्त्री, झलकारी बाई, वीर अब्दुल हमीद, अवंती बाई, चंद्रशेखर आजाद जैसे महापुरुषों पर लिखे श्रेष्ठ गीत शामिल किए गए हैं। ये रचनाएँ बाल सुलभ सरलता के साथ-साथ गहरी प्रेरणादायक भावनाओं से भी ओतप्रोत हैं।

गौतम बुद्ध के करुणा और अहिंसा के संदेश, डॉ. भीमराव अंबेडकर के समानता और संविधान निर्माण में योगदान, कांशीराम के सामाजिक न्याय की अवधारणा, अटल बिहारी वाजपेयी के ओजस्वी विचार, ज्योतिबा फुले का नारी शिक्षा के प्रति समर्पण, माउंटेन मैन दशरथ मांझी का दृढ़ संकल्प और मुंशी प्रेमचंद की समाज सुधारक छवि–ये सभी व्यक्तित्व इस संकलन में एक सुंदर माला के रूप में पिरोए गए हैं।

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरल, प्रभावशाली और बाल मन को सहज रूप से आकर्षित करने वाली भाषा है। बाल साहित्य लेखन में जिस प्रवाह और सहजता की आवश्यकता होती है, वह इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। गीतों में लय, तुकबंदी और सहज भावाभिव्यक्ति बच्चों को गुनगुनाने के लिए प्रेरित करती है। प्रत्येक गीत के माध्यम से किसी महापुरुष का जीवन, उनके विचार और संघर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे बच्चे न केवल मनोरंजन प्राप्त करेंगे, बल्कि उनके विचारों से प्रेरणा भी लेंगे।

बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होता, बल्कि यह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और समाज में उनकी भूमिका को

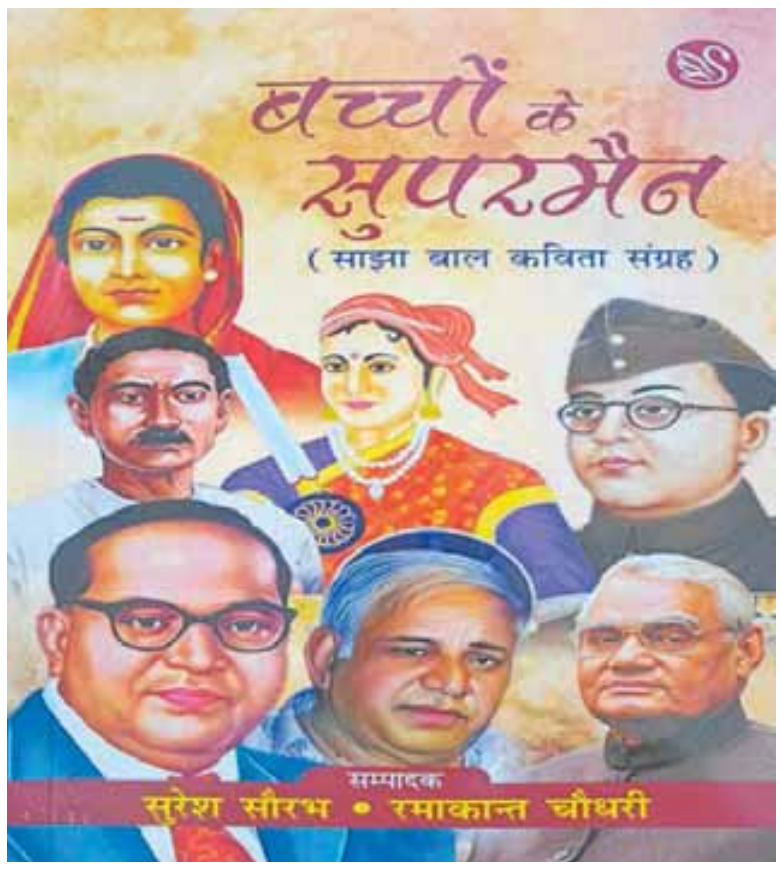

परिभाषित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। बच्चों के सुपरमैन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पुस्तक बच्चों को देशभक्ति, नैतिकता, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, संविधान के प्रति आस्था, और समाज सेवा जैसी महत्वपूर्ण अवधारणाओं से परिचित कराती है। जब बच्चे इन गीतों को गुनगुनाएँगे, तो वे अनायास ही जीवन की अनेक समस्याओं का हल खोजने में सक्षम हो जाएँगे।

इस पुस्तक का संपादन श्री सुरेश सौरभ और श्री रमाकांत चौधरी ने अत्यंत कुशलता से किया है। सुरेश सौरभ न केवल एक बहुआयामी कहानीकार हैं, बल्कि बाल साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान भी उल्लेखनीय है। उनकी दृष्टि व्यापक है, और उन्होंने इस पुस्तक को एक ऐसा रूप प्रदान किया है जो बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

संपादन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पुस्तक में संकलित रचनाएँ विषयवस्तु के अनुरूप चुनी गई हैं, जिससे बच्चों को ऐतिहासिक और प्रेरणादायक व्यक्तित्वों के बारे में रोचक और काव्यात्मक रूप से जानकारी मिलती है। रमाकांत चौधरी के संपादन कौशल ने इस संग्रह को और भी प्रभावशाली बनाया है।

इस संग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह बच्चों में शिक्षा, देशप्रेम, कर्तव्यबोध और आत्मनिर्भरता जैसी भावनाओं को जागृत करता है। महापुरुषों की जीवनी केवल इतिहास नहीं होती, बल्कि वे हमें भविष्य की ओर बढ़ने का मार्ग भी दिखाती हैं। यह पुस्तक बच्चों को यह समझाने में सक्षम होगी कि वे भी अपने भीतर साहस, आत्मविश्वास, मेहनत और ईमानदारी जैसे गुणों का विकास कर सकते हैं और अपने जीवन में असाधारण कार्य कर सकते हैं।

बच्चों के सुपरमैन केवल एक बाल कविता संग्रह नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भविष्य निर्माण की दिशा में एक सशक्त प्रयास है। यह पुस्तक बच्चों के मन में उन महापुरुषों के प्रति सम्मान, उनके विचारों के प्रति आस्था और उनके आदर्शों को आत्मसात करने की प्रेरणा जागृत करती है।

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह शिक्षा और मनोरंजन का संतुलन बनाए रखता है। इसकी कविताएँ सहज, सरस और भावनात्मक हैं, जिससे बच्चे इन्हें पढ़ने और गुनगुनाने के लिए प्रेरित होंगे। यह पुस्तक बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों-सभी के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक- बच्चों के सुपरमैन
संपादक- सुरेश सौरभ और रमाकांत चौधरी
प्रकाशन-श्वेतवर्णा प्रकाशन
मूल्य- 249 रुपये

स्मृति लेख

निर्भीक कलमकार: जय कुमार जलज

प्रकाश हेमावत

शब्द तो शब्द होता है शब्दों से शब्दों को मिलने से ही गीत , गजल , कविता , दोहा , छंद आदि काव्यात्मक अभिव्यक्ति बन जाती है जिसे गाया जा सकता है । आइए, इस रचनात्मक यात्रा का हमारे अपने डॉ जय कुमार जलज ने इसमें शब्दों का प्रयोग किस स्तर पर किया है ? भाषा , शिल्प , कथ्य , कहना , शैली आदि किस स्तर पर और किस तरह का प्रयोग किया हैं ? इन सभी बातों का समाधान उनकी कविता खुद-ब-खुद बता देती है ऐसे हैं हमारे डा जय कुमार जलज जी ।

रचनाकार सदैव कहीं विचारों के साथ कल्पनाओं में घूमता रहता है वह अपने शब्दों के संकल्पना के साथ किसी विषय वस्तु को कागज पर अंकित करता है तो उसे ऐसा लगता है हमारे आसपास घटित घटनाओं को देखकर लिखना और उसके समाधान को हल करने का जो संकल्प लिया था वह संकल्प पूरा होता है । डॉ जय कुमार जलज जहां लेखक के रूप में अपनी यात्रा साधना की तरह तय करते थे।

इस यात्रा में शब्दों से संचित कर्म का परिणाम स्वरुप वह कविता के माध्यम से पाठकों के बीच में सदैव अविरल गंगा की तरह बहता रहते थे। यही लेखक की लेखनी उन्नति है जिसे मैं अपने अल्प ज्ञान वाली मंद बुद्धि के आधार पर कह सकता हूं कि , आज भले ही जलज जी हमारे बीच में नहीं है लेकिन उनकी बात और बताई गई राह पर चलते हुए उन विचार जब चिंतन के रूप में अध्ययन के साथ मनन के रूप में हमारे पास आते हैं तो वह दिलो दिमाग में स्थाई रूप से घर कर जाते हैं । इसलिए कहना पड़ता है ऐसे हैं हमारे अपने जलज जी।

डॉ जय कुमार जलज की कविताएं भूल कर भी भूल नहीं सकते हैं वह इसलिए कि , उनकी कविताओं में शब्द का प्राकृतिक सौंदर्य ही कलम का लिबास है । वह कागज के घर में कालजयी रचना के रूप में रहतीं है यह कहना कतई गलत नहीं है । संसार की हर उपलब्धि के पीछे एक भय छुपा रहता है लेकिन डॉ जय कुमार जलज ऐसे साहित्यकार हैं जिनके जीवन में भय कभी था ही नहीं। वह अभय होकर अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से भाव को प्रकट करते थे जो समय की पदचाप को सुनते हुए कागज पर शब्दों को हमेशा हमेशा के लिए अंकित करते थे। इसीलिए कहते हैं कोयला ही समय के साथ रहते हुए एक चमकदार हीरा बन जाता है, जिसका मोलभाव लगाना कदापि संभव नहीं। इसलिए आज डॉ जय कुमार जलज की स्मृति में हमारे आपने जलज जी को याद करते हुए उनके संस्मरणों और गीतों के माध्यम से भावांजलि दीं जा रही है ।

लघुकथा

अम्बिका कुशवाहा अम्बी

प्रथम प्रेम

विपुल ने सोचा आज वर्षा से जरूर मिलूँगा, उस से अपने दिल की बात बोल दूँगा। विपुल शाम को कोचिंग क्लास जाता है। वर्षा पहले से वहाँ होती है। विपुल वर्षा से क्लास खत्म होने के बाद कॉफी पीने के लिए कैफ़े चलने का आग्रह करता है।

दोनो कैफ़े जाते है। विपुल वर्षा से कहता है, मैं तुम से प्यार करता हूँ।

वर्षा हँसते हुए कहती हैं, विपुल! हर रिश्ते का नाम मोहब्बत नहीं होता

है। प्यार वही करना चाहिए, जहाँ निभाया जा सके। मैं और तुम सिर्फ दोस्त है। तुम्हे और मुझे अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। माँ बाप के सपने को पूरा करना प्रथम प्रेम है।

विपुल को वर्षा की बात अच्छे से समझ मे आ जाती है। वह वर्षा को शुक्रिया कहता हैं।

कविता

मैंने तुमको पढ़ा है जैसे

सीमा देवेन्द्र

आँखों से तुम वो कह देते
जो कुछ कहना सही नहीं
चांद चकोरी अवनी अम्बर
सी दूरी भी सही नहीं।

इतने रंग देखे आँखों में
इतने तो है कहीं नहीं
झूम रहे है फाग बसंत
इन्द्र धनुष वो कहीं नहीं।

अधरों की भाषा अलग थी
शब्द झरे थे वहीं कहीं
चूमें थे वो इक इक अक्षर
जैसे मधु भी वहीं कहीं।

हर धड़कन हिरदय पट खोले
मधुर मिलन का आमंत्रण
प्रेम काव्य की खुली पत्रिका
हो तुम जैसी कोई नहीं।

मैंने तुमको पढ़ा है जैसे
तुम भी मुझको पढ़ डालो
भाव व्यक्त की सीमा है प्रिय
प्रीत भी ऐसी कहीं नहीं।

आंखों का विस्तार

विवेक कुमार मिश्र

यहां से वहां तक
संसार अपने विस्तार में
आंखों का ही रूप संसार है
आंखें देखती हैं रचती हैं
और संसार से
जोड़ने का काम करती हैं

जहां तक हमारे कदम बढ़ते
आंखों के ही रूप बन चलते हैं
आंखें रुकती नहीं है
बस अपना विस्तार
रचती चली जाती हैं
जो विस्तार है
आंखों का विस्तार है
जो आकाश है
आंखों का ही आकाश है
आंखें ही रचती रहती संसार
आसपास का विस्तार
और वह सब जो दुनिया में है
वह सब आंखों का ही विस्तार है।

कविता

तनिक ठहरो भी वसंत

कारुलाल जमड़ा 'कारुण्य'

हर बार ही तो आते हो वसंत !
पर ठहरते कहाँ हो?

इन दिनों
हर साल ही आते हो
कुछ दिनों के लिए
कभी महीने भर,तो कभी हफ्ते दो हफ्ते

हम तुम्हारे इंतज़ार में
साल भर बैठते हैं पलकें बिछाये
कि फिर कोई गम साल जाता है
वासंती रंग के पहले पतझड़ आ जाता है

इस बार ठहरो न यार !
दुःख के बादलों में से छितरने दो सुख
थोड़ा महकने दो सरसों के फूलों की तरह
पता नहीं कब जिंदगी फिर पलाश बन जाये

हर बार ही तो आते हो वसंत !
पर ठहरते कहाँ हो?
तनिक ठहरो भी !

कविता

नया राग

अनुजीत इकबाल, लखनऊ

आखिर एक दिन वह क्षण भी आएगा
जब तुम, समय की देहरी पर खड़े
स्वयं को निहारोगे और
स्वयं का ही अभिवादन करोगे
संध्या के अस्त होते आलोक में
जब आकाश गोधूली रंगों से भर जाएगा
और दूर मंदिर की घंटियां
किसी भूले-बिसरे स्वर को जागृत करेंगी
तुम खुद को कहोगे,
आओ, विश्राम करो अब, बहुत हुआ...
राग यमन की मधुरता में डूबा क्षितिज
धीमे-धीमे तुम्हें अपनी बाँहों में समेटने लगेगा
सप्तक के मध्यम सुर पर
थिरकते सरोद और सितार की ध्वनियाँ
तुम्हारे मन के रिक्त कोनों को भरने लगेंगी
तुम अपनी उस विलुप्त छवि को आलिंगन दोगे
जो अनवरत तुम्हारे साथ चली
पर तुमने उसे कभी अपना नहीं माना
तुम उसके हाथ में धरोगे वह सारा प्रेम
जिसे तुम लोगों को अर्पित करते-करते
स्वयं रिक्त हो गए थे...
और वह छवि प्रतीक्षा करती रही
राग अहीर भैरव की तरह
जो भोर में फिर से स्वर पा सकेज
अब, वह राग फिर से लौटेगा
राग संधिप्रकाश, जिसे केवल संध्या जानती है
फिर तुम अपने हृदय से झरने दोगे
वह समस्त विषाद, वे अवसन्न स्वर
वे विफल स्वप्न
जो आजीवन शोकगीत बने रहे
और तब, झंकार उठेगी
रात्रि के गंभीर आकाश में, राग मालकौंस की
रुद्रवीणा की कंपन भरी ध्वनि
जब रात्रि के प्रथम प्रहर में घुल जाएगी
और पखावज की थाप गूंजेगी
तब तुम अपनी ही धुन में खो जाओगे
और स्वयं का मंगल गान करते हुए
रचोगे एक नया राग।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वक्रोक्ति

मोहम्मद हुसैन हाटपिपल्या वाला

मान सम्मान

ज्यादातर दुकानदार किसी ग्राहक को वस्तु के भाव बतलाता है तो ग्राहक भाव करने को कहता है तो दुकानदार कहता है आप के मान सम्मान के लिए 20,50 रुपया कम कर देते है तो ग्राहक खुश हो जाता हैं हमारा मान सम्मान रखा।या कोई बड़ा सौदा या डील में मान सम्मान कि गुंजाइश रखी जाती है तो सौदा पूरा होता है ग्राहक दुकानदार से हमेशा ही कहता है मान सम्मान से कुछ तो कम करो।

मान सम्मान ऐसा भाव है सभी अपने दिलों में महसूस करने की तमन्ना रखते है । किसी को अग्रिम पंक्ति में बैठा दिया जाता है या कोई मंच पर आसीन कर दिया जाता है।

नेता राजनेता अक्सर प्रयासरत होते है इसे पाने के लिए। गाहे बगाहे इन्हें मिल भी जाता है बाकी सभी क्षेत्रों में भरपूर मेहनत करनी पड़ती है और संपूर्ण जीवन की आहुति देनी पड़ती है जैसे कला,खेल,अभिनय ,गायन,संगीत, समाजसेवा आदि इन क्षेत्रों में विशेष कार्य करने पर संस्थाएं और सरकारें मान सम्मान प्रदान करती है।

राजनीति में विपक्षी दलों तोड़फोड़ अग्रणी नेताओं को अपने दल में शामिल कर शुरुआती चरण में भरपूर सम्मान मान दिया जाता है मंत्री पद मुख्यमंत्री पद से नवाज कर बाद में भले ही जमीनी हक़ीक़त दिखा दी जाए।

सत्ता पक्ष के सभी विभाग सम्मान वाले और मलाईदार होते है। इसकी चाहत सभी रखते है। भारत सरकार का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न है जो मरणोपरांत भी दिया जाता है। केंद्रीय सरकार और प्रदेश सरकार अलग अलग क्षेत्रों में कई सम्मान देती है राजनेताओं को 75,80 के होते उन्हें सम्मान देते हुवे परामर्श समिति में ले लिया जाता है खाली मान सम्मान काम कोई नहीं।

ऐसे ही खेलो रिटायर्ड खिलाड़ियों को सम्मान स्वरूप मैनेजर या टीम का कोच बना दिया जाता है। राष्ट्रपति और राज्यपाल वाले पद सम्मान वाले होते है शक्तियां इनके पास कम रहती है।

साहित्य में सम्मान जुगाड से लेते है में तेरी पीठ खुजाऊ तू मेरी पीठ खुजा। ऐसी तिकड़मी स्कीम से सम्मान की शाल श्रीफल प्राप्त कर लेते है। एक पर्व गुरुपूर्णिमा और शिक्षक दिवस होता है जहां गुरुओं का सम्मान और टीचरों का मान सम्मान किया जाता है। सबसे बड़ा सम्मान माता पिता का करना चाहिए आखिरी पड़ाव मरण आसन्न तक करना चाहिए ताकि उनका ऋण चुका सके।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

बच्चों के कलाकृतियों में भी होता है अनंत आकाश

एक ही विषय पर हर बच्चे अपनी अलग-अलग अभिव्यक्ति देते हैं और आश्चर्य कि किसी को भी झुठलाया नहीं जा सकता, सभी अपने कल्पना या मनः स्थिति के अनुसार उपस्थित हुए होते हैं और मौलिकता लिए होते हैं, मौलिकता इसलिए क्योंकि कला में नकल संभव ही नहीं है। बच्चे आजाद परिंदों की भांति जब कला के जरिए सफर पर होते हैं तो उस समय उनके आनंद का कोई भी पैरामीटर जवाब दे जाए खुशी कुछ ऐसी होती है। उनके बनाए कृतियों में एक नया उजास होता है, एक नई उर्जा होती है बस हमें उनके कृतियों को उनके नजर से समझने का प्रयास करना होता है। बात कोविड के समय की है लोग घरों में कैद थे। डर सभी में व्याप्त था, मन बेचैनियों के पराकाष्ठा को छू रहा था, भविष्य के उम्मीद पर भी संकट साफ जाहिर हो रहा था, आने वाले कल की उम्मीद पर भी संकट था।

जीवन की कल्पना भी जब से जेहन में आई होगी कला दर्पण की भांति पहले ही उपस्थित हो गई होगी। जीवन और कला एक दूसरे के बिना अधूरे माने जा सकते हैं। हां कला को हम कला के रूप में माने या न माने ये बात दीगर है। कल्पना, कल्पना और यथार्थ के बीच की जो कड़ी होती है या उसके बाद की प्रक्रिया जिसे संपूर्ण माना जा सके या नहीं पर कला वहां भी है। बात अभिव्यक्ति की हो और कला का जिक्र न हो संभव ही नहीं है। आज जबकि शिक्षा में बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वो रटे-रटाए उत्तरों से बचते हुए खुद को अभिव्यक्त करें। अपने अनुभवों और शब्दों के माध्यम से उत्तर तक पहुँचे। इस हेतु कला बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कला में बच्चों को पूरी आजादी होती है, बंधनों से परे कल्पनाओं में उड़ने की आजादी, सोच को एक आजाद फलक तक पहुंचाने की आजादी, रंगों, रेखाओं विचारों के साथ उछल-कूद करने, डूबने-उतराने की आजादी। आजादी का आजाद दायरा यानि अनहद के आगे तक की भी यात्रा कला में ही संभव है। हम इससे इतर भी अगर कुछ सोचना चाहेंगे तो वह भी कला ही होगी या वहां भी कला ही होगी। हम चूंकि आज बच्चों के अभिव्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमते हुए आगे बढ़ रहे हैं, उसी पर चर्चा कर रहे हैं इसलिए उसी दायरे के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे।

एक ही विषय पर हर बच्चे अपनी अलग-अलग अभिव्यक्ति देते हैं और आश्चर्य कि किसी को भी झुठलाया नहीं जा सकता, सभी अपने कल्पना या मनः स्थिति के अनुसार उपस्थित हुए होते हैं और मौलिकता लिए होते हैं, मौलिकता इसलिए क्योंकि कला में नकल संभव ही नहीं है। बच्चे आजाद परिंदों की भांति जब कला के जरिए सफर पर होते हैं तो उस समय उनके आनंद का कोई भी पैरामीटर जवाब दे जाए खुशी कुछ ऐसी होती है। उनके बनाए कृतियों में एक नया उजास होता है, एक नई उर्जा होती है बस हमें उनके कृतियों को उनके नजर से समझने का प्रयास करना होता है। बात कोविड के समय की है लोग घरों में कैद थे। डर सभी में व्याप्त था, मन बेचैनियों के पराकाष्ठा को छू रहा था, भविष्य के उम्मीद पर भी संकट साफ जाहिर हो रहा था, आने वाले कल की उम्मीद पर भी संकट था। कुछ समय बाद ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हुईं। बच्चों को कला के माध्यम से डर से बाहर निकालने के प्रयास में मैंने वीडियो बना कर कक्षा के ग्रुप में शेयर करना शुरू किया। चित्र बनाने की विधियाँ एवं कला से संबंधित वीडियो का असर ये हुआ कि बच्चे सब कुछ भूलकर इसी में रमें रहने लगे। निरंतर रंगों एवं रेखाओं से खेलते हुए अपनी एक अलग दुनिया बनाने में सफल हुए। एक ऐसी दुनिया जहाँ कल्पना में निरंतर गोते लगाने की पूरी आजादी होती है जहाँ कोविड का असर भी उनके मानसिक स्थिति को डावाँडोल करने में बेअसर रहा। कुछ बच्चे अपने अभिभावकों को भी इधर मोड़ पाने में सफल हुए। वैसे भी जब हम किसी मानसिक परेशानियों से जूझ रहे होते हैं तो कला, संगीत, साहित्य ही हमें वहाँ से बाहर ला पाती है।

कुछ बच्चे तो आज भी बहुत अच्छा कर रहे हैं। अपनी अभिव्यक्ति में समाज के समस्याओं, अच्छे-बुरे को बहुत ही अच्छे तरीके से संजो रहे हैं और अच्छी बात ये कि उस पर खुल कर चर्चा भी कर रहे हैं। वीडियो बनाते समय घर में मुझे मेरा बेटा रोज देखा करता था। वो उस समय पहली कक्षा में पढ़ता था। मेरे चित्रों के नकल करता रहता था। धीरे-धीरे अपनी अभिव्यक्ति खुद करने लगा। आड़ी-तिरछी किन्तु निडर स्ट्रोक युक्त रेखाएं, कुछ भी किसी भी परिवार के रंगों का निडरता से प्रयोग उसकी विशेषता बन गई। देखते ही देखते करीब दो सौ चित्रों का संग्रह हो गया उसके पास। कभी-कभी अचानक से किसी प्रतियोगिता में जाना होता है। बच्चों से उनके रुचि के अनुरूप पूछ लिया जाता है। कुछ बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु तुरंत तैयार हो जाते हैं। उन्हें अचानक से विषय बताया जाता है। वैसे भी कला के प्रतियोगिता में विषय स्पॉट पर ही दिया जाता है। आश्चर्य कि बच्चे, छोटे बच्चे कितनी गूढ़ रहस्यों से भरी कृतियों का निर्माण कर जाते हैं। जहाँ तक हम और आप या आम जनमानस आसानी से पहुँच भी नहीं सकता बच्चे अपने कृतियों के माध्यम से पहुँच जाते हैं। प्रतियोगिता में पुरस्कृत होना न होना अलग बात है पर उनकी अभिव्यक्ति क्षमता पर अध्ययन किया जाय तो हर बच्चे के कृति में उसकी अपनी एक दुनिया होगी जहाँ वो खुल कर रंगों से खेला है, बतियाने का प्रयास किया है एक-एक रेखाओं से। फिल्म 'तारे जमीं पर' इसका एक बहुत ही बढ़िया उदाहरण है। भारतीय कला में चित्रकार राजा रवि वर्मा के योगदान से शायद ही कोई अपरिचित हो। रवि वर्मा मात्र 14 वर्ष के थे जब उनके चाचा एक चित्र अधूरा छोड़ कर कहीं चले गए थे। आश्चर्य कि जब वो वापस आए उनका चित्र पूरा हो चुका था। बालक रवि वर्मा द्वारा बचा हुआ चित्र पूरा कर दिया गया था और कहीं से अप्रशिक्षित कलाकार द्वारा बनाया भी नहीं लग रहा था। उनके चाचा इतने प्रभावित हुए कि बालक रवि वर्मा के सुनहरे भविष्य हेतु पूरी तन्मयता के साथ जुट गए। 14-15 वर्ष की अवस्था में पिकासो के उम्दा चित्र देखकर और उन चित्रों से प्रभावित होकर उनके पिता जो खुद कला अध्यापक थे, को लगा कि इन कृतियों के आगे तो मेरी कृतियाँ कहीं भी नहीं ठहरती फलतः उन्होंने चित्र बनाना ही छोड़ दिया था। पेंटिंग संबंधित अपना सारा सामान उन्होंने पिकासो को दे दिया और कला के दुनिया में उड़ने हेतु आशीर्वाद भी। इस दुनिया में जितने भी लोग हैं किसी न किसी खूबियों से भरे हुए हैं। कोई न कोई विशेषता उनके पास है जो उन्हें औरों से अलग बनाती है। बच्चों के साथ भी यही बात सटीक बैठती है। बस आदरणीय अध्यापकों को उनके खूबियों को ढूंढ़ना है और उसी ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्हें शुरू से ही कुछ नया करने की आजादी देनी है। बच्चों के साथ जजमेंटल नहीं होना है। ऐसा करने पर निश्चित रूप से हम बच्चों से उम्मीद से ज्यादा प्राप्त कर पायेंगे। विषय कोई भी हो आजादी हर जगह चाहिए, खोज की गुंजाइश हर जगह है। हमें बच्चों को संवाद का पूरा मौका देना चाहिए। उनके बातों पर उनके साथ खुल कर विचार रखना चाहिए। छोटी-छोटी नाटिकाओं के माध्यम से गंभीर से गंभीर विषयों पर कार्यक्रम करवाने चाहिए। पर्यावरण, नशामुक्ति, संस्कृतियों का क्षरण, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फायदे और नुकसान जैसे विषयों पर खुले मंच पर वाद-संवाद करवाना चाहिए। बच्चों को उन्हीं के द्वारा सही ग़लत के निर्णय तक पहुंचने हेतु स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। हमें उन गतिविधियों में बिल्कुल उदासीन बनकर रहना चाहिए। वहाँ श्रोता और वक्ता दोनों बस छात्र ही रहें। कुछ वर्ष पहले विद्यालय के पत्रिका हेतु बच्चों से उनका लिखा कुछ आमंत्रित किया गया था। अधिकतर बच्चे किसी और की लिखी कविताएं ला रहे थे जबकि एक छात्रा माँ पर आलेख लिख कर लाई थी। उसके लेखनी से उसके अंदर बैठे घबराहट को मैं देख पा रहा था जो हर किसी, जो पहली बार लिखता है के साथ होता है। उसे मैंने प्रेरित किया कि वो यही रचना दुबारा और बिना डरे लिखे। उसने लिखा और इतना भावयुक्त लिखा कि पढ़ कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जा सकता था। रचना प्रकाशित भी है। कला पर बच्चों के वक्तव्य सुन कर मन गदगद हो उठता है उम्मीद और बढ़ जाती है। सभी अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वो अपने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में उनके भाव, विचार और उनके मन मुताबिक विषय में आगे बढ़ने में उनकी मदद करें ताकि बच्चे खुल कर अपने विषय के साथ अपने विचारों को भी जोड़ सकें और जीवन में बहुत आगे निकल सकें। नई शिक्षा नीति में निश्चित रूप से शिक्षा को लेकर बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है और इससे बच्चों के अध्ययन, कला के सृजन पर बहुत प्रभाव पड़ने वाला है साथ ही साथ कला के प्रति लोगों के रवैया पर भी बदलाव होने वाला है। संलग्न कलाकृति दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय के पांचवी कक्षा के छात्र आर्नव तिवारी की है।

पुनर्स्मरण

❐ विष्णु प्रभाकर

एक समर्पित व्यक्तित्वः काशिनाथ त्रिवेदी

नाटी दीर्घ काया,कर्म के उल्लास से दमकता मुख-मण्डल, आंखों में सहज आत्मीयता और स्नेह से आप्लावित, निरंतर आगे बढ़ते चरण और कर्म साधना के प्रतीक दोनों हाथ। इन रूप-रेखाओं का साकार-आकार थे-श्री काशिनाथ त्रिवेदी। उनके जीवन का मूल मंत्र मानों यही था। ''चलते-चलो, चलते-चलो, रूकने का है नहीं काम।'' उनके इन गुणों के कारण उनमें ऐसा सहज आकर्षण पैदा हो गया कि व्यक्ति सहज ही उनकी ओर खींचे चले आते थे। उन्होंने कभी किसी के आने जाने की चिंता नहीं की, जो आया उसे अपना बना लिया।

उन्होंने श्री अरविन्द के इस मंत्र को ''कर्म ही नियति के प्रति शरीर की सबसे बड़ी प्रार्थना है'' अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। वह अपने इस पथ से कभी डिगे नहीं, तब तक नहीं डिगे, जब तक शरीर ने जवाब नहीं दे दिया। निश्चय ही जीवन के अंतिम तीन वर्ष उनके लिए गहरे आत्म मंथन के रहे होंगे, दूसरों के लिए जीने वाले ऐसे कर्मठ व्यक्ति को यह कष्ट क्यों? पर उन्होंने उसे कष्ट माना ही नहीं। सहज अंत जानकर स्वीकार कर लिया।

उनकी मृत्यु 91 वर्ष की आयु में 26 जून, 1996 को हुई। उनका अन्तिम पत्र मेरे पास 17 जुलाई 1994 का है, जो उन्होंने बोलकर लिखवाया था। उस समय उन्होंने लिखा था ''अब पत्र व्यवहार की मेरी गति कुंठित होती जा रही है, मैं अपने 88 साल पूरे कर चुका हूं, इस कारण मेरी शारीरिक सक्रियता काफी कम हो चुकी है....''

उनके बाद बस मुझे उनके देहावसान का समाचार देता हुआ एक पत्र मिला था। उनसे पहला परिचय कब हुआ यह मुझे ठीक-ठीक याद नहीं। मैं सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली में कुछ घंटे के लिए प्रतिदिन जाकर बैठता था। वहां राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों के और राष्ट्रीय नेता आया करते थे। उन्हीं दिनों अचानक जब मैं मण्डल पहुंचा तो देखता हूं कि काशिनाथ जी बाहर के बड़े कमरे में एक मेज को साफ कर रहे हैं। मैंने अचकचा कर पूछा आप यह क्या कर रहे हैं, तो वह सहज आत्मीय स्वर में बोले-मैं यहां लाइब्रेरी से एक पुस्तक निकालने आया था, देखा मेज पर बहुत धूल जमी हुई है इसलिए उसे साफ कर दिया।

मेरी स्मृति पटल पर उनका पहला यही चित्र अंकित है, और अंत तक यही चित्र मेरे मानस पटल में अनेक रूप लेता रहा। भाई यशपाल जी ने उनका परिचय देते हुए कहा था कि जब यह मध्य भारत राज्य में शिक्षा मंत्री थे तो चपरासियों के आने से पहले ही वहां पहुंच जाते थे और मेज, कुर्सी सब की सफाई स्वयं ही कर लेते थे।

ज्यों-ज्यों मेरा उनसे परिचय बढ़ा, मैं उनका सहजता, सरलता,आत्मीयता, सजगता और कर्मठता से चकित होता गया। एक व्यक्ति में इतने सारे गुण, इतनी समरसता के साथ कैसे रह सकते है। उनका पहला पत्र मेरे पास 25 अक्टूबर 1966 का है। जिसमें उन्होंने समाचार पत्रों में मेरे पिताजी के स्वर्गवास का समाचार पढ़कर मुझे संवेदना प्रकट करते हुए लिखा था। उनका यह वाक्य मैं कभी नहीं भूल सकता- ''पूज्य श्री पिताजी की पुण्य स्मृति हम सब को सदा सत्प्रवृत्त बनाए रहे, यही प्रार्थना है।''

उसके बाद दूसरा पत्र 13 वर्ष बाद 13 अगस्त 1979 का है। उन दिनों मेरी पत्नी कैंसर से पीड़ित थी, उसी के बारे में उन्होंने मुझे विस्तार से उपचार की विधि बताई थी। इस पत्र से जो सिलसिला आरंभ हुआ, वह सन 1994 में ही समाप्त हुआ। इस अवधि में मुझे उन्होंने डेढ़ सौ पत्र लिखे। उन पत्रों में जैसे उनके सारे जीवन की प्रवृति प्रतिबिम्बित होती है। उन्होंने अपना जीवन गांधीजी को समर्पित कर दिया था। वे उनके आश्रम में रहे, उनके पत्रों का संपादन किया। गांधीजी जब भी उन्हें पत्र लिखते,तो चिरंजीव काशिनाथ लिखते, यह चिरंजीव ही दोनों के संबंधों की सघनता को प्रकट करता है।

मेरा उनसे लगभग तीस वर्षों से सघन संबंध रहा। उस सघनता को उन्होंने ऐसा आत्मीयतापूर्ण बना दिया था कि आज जब मैं उस पर दृष्टि डालता हूं तो लगता है जैसे कोई सपना देख रहा हूं। उन्होंने सारा जीवन गांधीजी की साधना को कार्य रूप में परिणत करने में लगा दिया। वह कब कहां होंगे, किसे साथ होंगे, क्या कर रहे होंगे, इसका पता करना असंभव जैसा था। आज का कोई भी व्यक्ति उनकी गतिशीलता और कर्मठता पर विश्वास नहीं करेगा। उन्होंने गांधीजी के सिद्धान्तों के अनुरूप टवलाई। (जिला-धार, म.प्र.) में आश्रम की स्थापना की। नियम से प्रतिवर्ष पद यात्रा करते हुए गांवों में गांधी विचार धारा को प्रवाहित किया। सर्वोदय मेले लगाए।

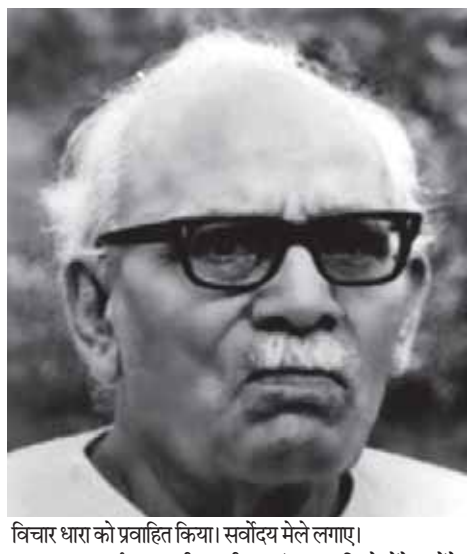

अद्भुत कार्य क्षमता थी उनकी। असंख्य पत्र लिखे होंगे उन्होंने। अगर उनका संग्रह किया जाए तो एक अद्भुत ग्रंथ तैयार हो सकता है। वह एक पोस्ट-कार्ड में इतना कुछ लिख देते थे कि जो एक अन्तर्देशीय पत्र में भी न लिखा जाए। इतना स्पष्ट और सुदंर लिखते थे कि पढ़ने में कदाचित ही कभी कठिन हो। उनके पत्र राष्ट्र की निधि है और नई पीढी के लिए प्रेरणादायक। कम्प्यूटर के युग के लोग तो विश्वास ही नहीं करेंगे कि कोई व्यक्ति इतना काम कर सकता है।

गांधीजी के आदर्शों के अनुसार वह स्वयं जीते थे, और दूसरों को जीने की प्रेरणा देते थे। वह आदेश नहीं देते थे, उदाहरण बनते थे। मैंने उनके एलबम में वह चित्र देखे हैं, जिनमें विवाह पद्धति के समय वर और वधु दोनों सफाई का काम कर रहे, झाड़ू लगा रहे हैं, कूडा उठा रहे हैं। अपने 22 अप्रैल 86 के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था मैंने ''शुक्र तारे के समान'' पुस्तक की प्रति आपको भेजने के लिए लिखा था। इस पुस्तक के साथ आए बिल के छः रूपये आप नवजीवन वालों को मनीआर्डर से भेजकर मुझको अनुग्रहित कीजिए। प्रकाशन संस्था ने पुस्तक का मूल्य आठ रूपये रखकर मुझको बहुत निराश और निरूपाय बना दिया। अस्सी पृष्ठों की पुस्तक के 8 रूपये लेने की हिम्मत मैं कर नहीं पा रहा हूं। सोचता हूं कि मैं ग्राहकों से छः रूपये ही लूं। छः भी अधिक लगते हैं।

उन्होंने बहुत से गांधी भक्तों की तरह परिवार का त्याग नहीं किया, बल्कि वह भरे-पूरे परिवार के स्वामी थे और उनके प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह करना उन्हें आता था। सौभाग्य से उनकी पत्नी ने जीवन भर उनका साथ दिया। परिवार की देखरेख का भार ही उन्होंने नहीं संभाला, बल्कि अपने पति की हर क्षेत्र में सहायता की। प्रारंभ में उन्हें गहनों का मोह था। तब काशिनाथ जी गांधीजी के आश्रम में रहते थे, और आश्रम में कोई गहने नहीं पहन सकता था, वे आश्रम में जमा कर दिए जाते थे। उनकी पत्नी कलावतीजी जब पहली बार वहां गई तो उन्होंने गहने अपनी पेटी में रख लिए। लेकिन बाद में वह चोरी चले गए। तब गांधीजी ने उनको लिखा ''तुम्हारे गहने चोरी गए, इसे दुःख की नहीं'', सुख की बात मानो।'' उसके बाद उनकी पत्नी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके घर में कभी गहने नहीं बने, और वह गांधीजी के सभी कार्यों में भाग लेने लगी। जेल भी गई।

काशिनाथ जी की कर्मठता और सफलता के पीछे उनकी सहधर्मिणी का बहुत बड़ा हाथ है, वह उनमें एकाकार हो गई। उनका प्रारंभिक जीवन काफी कठिनाइयों में से होता हुआ आगे बढ़ा था। एक दिन मुझे वह सारी कहानी सुनाते हुए उस समय कुछ व्यथित हो उठे थे, जब उन्होंने अपने छोटे भाई की व्यथा और वेदना का वर्णन किया। उस वेदना का अन्त आत्महत्या से हुआ, उसी क्षण जैसे वह उदविग्न हो उठे थे। नहीं तो मैंने उन्हें कभी विचलित होते नहीं देखा था। उनके कर्म में, उनके विचार, दूसरे के प्रति उनके व्यवहार में एक सात्विक समरसता थी।

मैं उन्हें अपने सगे बड़े भाई से बढ़कर ही मानता रहा। उन्होंने भी मुझे इतना अपना समझा कि जब चाहे अपने पास बुला लेते थे। उन्होंने मुझे भोपाल गांधी न्यास का ट्रस्टी भी बना दिया था। तब मैंने उन्हें और भी पास से देखा था। कैसी तीक्ष्ण और रचनात्मक दृष्टि थी उनके पास। गांधी भवन की प्रत्येक गतिविधि से उनका जीवंत परिचय था, और उसी के अनुसार वह काम करते थे। वह दूसरों को आदेश नहीं देते थे, बल्कि दूसरे स्वयं उनकी ओर खींचे चले आते थे। भवन की एक-एक गतिविधि से, उसके एक-एक कमरे से उनका आत्मीय परिचय था। वहां उन्होंने बड़े परिश्रम और लगन के साथ अपने पुत्र की सहायता से गांधीजी ने चित्रों की स्थायी प्रदर्शनी स्थापित की।

यद्यपि शुरू में उन्हें कुछ संकोच हुआ फिर सरकार की सहायता से नाना रूप नशा करने वाले व्यक्तियों के सुधार के लिए एक अस्पताल भी स्थापित किया। न्यास के सचिव रामचन्द्र भार्गव बड़ी ही तत्परता से उस सारे कार्य का संचालन जैसे उनके सामने करते थे, वैसे ही अब भी कर रहे हैं। वह उनका एक स्थायी स्मारक है। मुझे उनके साथ ठहरने खाने-पीने की योजना बनाने में बहुत आनन्द आता था। एक बार हम दोनों न्यास की बैठक के बाद इन्दौर गए और वहां से उनके आश्रम तथा दूसरे स्थानों की उनके साथ-साथ पैदल यात्रा की। मौसम बड़ा सुहावना था। रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो चुकी थी। घूम-घूम कर उन्होंने मुझे सब कुछ दिखाया, समझाया और उस युग के व्यक्तियों से मिलवाया। अन्त में वह मुझे माण्डव के प्रमुख और प्रसिद्ध गाइड के निवास स्थान पर ले गए। उनका नाम विश्वनाथ शर्मा था। वह मात्र गाइड नहीं थे, बल्कि इतिहासज्ञ भी थे। उनके कार्यकाल में भारत के अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति वहां आए थे। उनमें डॉ. राधाकृष्णन जैसे दर्शन के व्याख्याता और पं.जवाहरलाल नेहरू तथा शेष अब्दुल्ला जैसे इतिहासज्ञ और राजनेता थे।

जब हम माण्डव से लौट रहे थे तो सबेरे का समय था, हम दोनों अपना-अपना सामान उठाए चले आ रहे थे, कि सामने से कोई एक बड़े अफसर अपने साथियों के साथ आते दिखाई दिए, और फिर सहसा उनकी तरफ देखकर बोले-देखते हो, सामने से ये दो वृद्ध सज्जन अपना-अपना सामान उठाए कैसी मस्ती में चले आ रहे हैं।''

काशिनाथ जी ने सुना और मेरी ओर देखकर मुस्करा दिए। यह घटना बहुत साधारण है, पर काशिनाथ जी के अन्तर का परिचय देती है। उनके साथ-साथ मैं भी वह शौहरत पा गया। सच तो यह है उनके साथ रहते हुए मैंने एक नया जीवन पाया। इतनी घटनाएं हैं कि वर्णन करना मुश्किल हो जाएगा। इसके बाद काशिनाथ जी के लिए कुछ कहने के लिए नहीं रहा जाता। उनकी कर्मठता, उनकी चिन्तन शक्ति, उनकी साधना, मानव मात्र के प्रति गहन संवेदना, इसी समुच्य का नाम का काशिनाथ त्रिवेदी है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

मिसेजः एक गृहिणी की जद्दोजहद पर केन्द्रित फिल्म

फिल्म की कहानी ऋचा (सान्या मल्होत्रा) के आस पास बुनी गई है जो पेशे से एक क्लासिकल डांसर है। उसकी जिन्दगी में तब बदलाव आता है जब उसकी अरेंज मैरिज होती है। शादी के बाद नए घर में ऋचा कुछ सपने लेकर आती है लेकिन देखते ही देखते घर के कामों में उसे इस तरह खो जाना होता है कि वह अपने डांसिंग करियर को अहमियत ही नहीं दे पाती है। इन सब के बीच सान्या का पति दिवाकर (निशांत दहिया) न तो उसकी भावनाओं को समझता है और न ही उसे उसकी महत्वाकांक्षा पूरी करने में सहायता करता है ।

महिलाओं से जुड़े विषयों पर हिन्दी में कई फिल्में बनी हैं जिनमें महिलाओं की अस्मिता ,संघर्ष और निर्णय क्षमता का उदात्त चित्रण देखने को मिलता है।दर्शक ऐसी फिल्मों को खूब पसन्द भी करते हैं । समाज में महिलाओं की स्थिति को फिल्मों के माध्यम से दिखाने में भारतीय फिल्मकार बेहद दक्ष रहे हैं । महिलाओं पर आधारित ऐसे ही एक विषय को लेकर युवा निर्देशक आरती कड़व की एक फिल्म गत सप्ताह ओटीटी पर रिलीज़ हुई है -

' मिसेज '। फिल्म में सान्या मल्होत्रा केन्द्रीय भूमिका में है। फिल्म एक हाउसवाइफ (गृहिणी) की जद्दोजहद को दर्शाती है, जो अपने परिवार और घर के काम में सिमट कर अपने सपनों को भूल जाती है।इस फिल्म की निर्देशक आरती कडव की चर्चा इसके पहले फिल्म 'कार्गो' को लेकर हुई थी । इस बार उन्होंने एक मलयालम फिल्म -' द ग्रेट इण्डियन किचन 'का रीमेक बनाया है।

फिल्म की कहानी ऋचा (सान्या मल्होत्रा) के आस पास बुनी गई है जो पेशे से एक क्लासिकल डांसर है। उसकी जिन्दगी में तब बदलाव आता है जब उसकी अरेंज मैरिज होती है। शादी के बाद नए घर में ऋचा कुछ सपने लेकर आती है लेकिन देखते ही देखते घर के कामों में उसे इस तरह खो जाना होता है कि वह अपने डांसिंग करियर को अहमियत ही नहीं दे पाती है। इन सब के बीच सान्या का पति दिवाकर (निशांत दहिया) न तो उसकी भावनाओं को समझता है और न ही उसे उसकी महत्वाकांक्षा पूरी करने में सहायता करता है । समय बीतने के साथ ऋचा को ऐसा महसूस होता है कि वह केवल घर की देखभाल करने के लिए ही पैदा हुई है ऋचा अपने लिए हिम्मत जुटाकर अपने केरियर पर फोकस करती है और अपनी हैसियत का लोहा मनवाती है और संघर्ष में कहीं रंचमात्र भी कमजोर नहीं पड़ती है ।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है सान्या मल्होत्रा ने ऋचा की भूमिका में जबर्दस्त अभिनय किया है। उनकी अभिनय बेहद प्राकृतिक और सजीव है। सान्या ने हाउसवाइफ के किरदार को इस तरह निभाया है कि ऐसा लगता ही नहीं कि वह इस भूमिका में फिट नहीं हैं। उनकी परफॉर्मेंस दर्शकों को बहुत प्रभावी तरीके से जोड़ती है। सान्या मल्होत्रा ऐसी भूमिकाओं ?में अपना श्रेष्ठतम प्रस्तुत करने में दक्ष हैं और वे अपनी भूमिका में इतनी घुल-मिल जाती है कि सीन-दर-सीन उनक अभिनय निखरता जाता है । एक समीक्षक ने इस बात की तुलना ऐसी व्हीकल से की है और लिखा है कि - उनकी एक्टिंग की गाड़ी ऐसी भूमिकाओं में तो स्टार्टिंग प्वाइंट से ही थर्ड गियर में आ जाती है। जहाँ उनका पूरा फोकस उनकी भूमिका पर ही होता है । 'दंगल'बाला इसके पहले 'पगलैट' और 'कटहल' में भी वे ऐसा कर चुकी हैं। ये तीनों फिल्में डार्क ह्यूमर श्रेणी की फिल्में मानी जा सकती हैं। और, इन तीनों फिल्मों में सान्या मल्होत्रा पूरी फिल्म को अपने कँधे के बल खींचने में सफल रही है । कमोबेश ऐसा ही इस फिल्म में भी हुआ है । कंवलजीत सिंह ने ससुर के रोल में शानदार काम किया है और उनका अनुभव स्क्रीन पर साफ झलकता है। निशांत दहिया ने ऋचा के पति दिवाकर की भूमिका में प्रभावी अभिनय किया है।

आरती कड़व का निर्देशन अच्छा है, लेकिन फिल्म की पटकथा थोड़ा धीमी है। इसके बावजूद अच्छी बात यह है कि फिल्म कहीं पर भी उबाऊ नहीं लगती है। फिल्म का क्लाईमेक्स और आखिरी 15 मिनट काफी रोचक हैं। फिल्म थोड़ी छोटी भी होती तो भी इतना ही असर छोड़ती। हरमन वावेजा और अनु सिंह चौधरी ने फिल्म को लिखा है और यह एक प्रभावी कहानी है।कुल मिलाकर फिल्म को जरुर देखना चाहिए क्योंकि इसमें हमारे समाज के एक अहम मुद्दे को उठाया है ऐसे में शादीशुदा दम्पती और खासकर हाउसवाइफ्स को यह फिल्म देखनी चाहिए।निर्देशक आरती कडव फिल्म के मुख्य चरित्र ऋचा के साथ दर्शकों की संवेदनाएं जोड़ने में ही आधी फिल्म खर्च कर देती हैं। फिल्म के उत्तरार्ध में दोनों की जुगलबंदी असरदार होती दिखती है लेकिन कहानी में कुछ खास हो न रहा हो तो दर्शक ओटीटी पर तुरंत फिल्म बदल देते हैं। गीत-संगीत के लिहाज से भी फिल्म में कुछ खास मनोरंजन जैसा कुछ है नहीं। पति-पत्नी के बीच जेन जी के दौर में बदलते समीकरणों से पूरी तरह अनजान ये फिल्म 'मैं चुप नहीं रहूंगी' के दौर की फिल्म जान पड़ती है। और, इतना बासी स्वाद भला आज के दौर में किसे ही पसंद आएगा!

मोटरसाइकिल चोरी के प्रकरण में एक आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। मुलताई पुलिस ने मोटर साइकिल चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार थाना में धारा 303(2) बी.एन.एस. के तहत 5 जनवरी को एक मोटर साइकिल चोरी का मामला दर्ज किया गया था। फरियादी डोमेश भरने निवासी वार्ड नं. 07 लांजी ने शिकायत की थी कि 16 दिसंबर 2024 की रात करीब 7 बजे वह अपनी लाल महरून रंग की होण्डा सीबी साइन एसपी मोटरसाइकिल को अपने

किराये के मकान के बाहर खड़ा करके अपने कमरे में चला गया था। बाद में जब वह 9 बजे वापस बाहर आया, तो उसकी मोटरसाइकिल गायब थी। शिकायत पर थाना मुलताई में चोरी का मामला दर्ज कर लिया गया। चोरी गई मोटरसाइकिल की तलाश में पुलिस द्वारा जिले के सभी थानों और चौकियों को सूचित किया गया। एसडीओपी मुलताई मयंक तिवारी के मार्गदर्शन में पुलिस ने आरोपी की तलाश तेज कर दी। 14 फरवरी को थाना मुलताई को सूचना मिली कि सोनू उर्फ गोलू निवासी पाथाखेड़ा चोरी की मोटरसाइकिल लेकर पाथाखेड़ा में घूम रहा है। सूचना के बाद चौकी प्रभारी पाथाखेड़ा के सहयोग से एक टीम बनाई गई और आरोपी को पाथाखेड़ा से गिरफ्तार किया गया। आरोपी के पास से चोरी की मोटरसाइकिल बरामद की गई। आरोपी सोनू उर्फ गोलू, पिता संजय डोंगरे (उम्र 24 साल) को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी मुलताई निरीक्षक देवकरण डेहरिया, उपनिरीक्षक वंशज श्रीवास्तव, चौकी प्रभारी पाथाखेड़ा, सउनि एम.एल. गुप्ता, आरक्षक अजय, और उमेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

नागपुर रेलवे ट्रैक पर मिला शव, ट्रेन से गिरकर मौत की आशंका

बैतूल। नागपुर रेलवे ट्रैक पर हतनापुर के पास शनिवार सुबह एक शव मिला है। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने आशंका जताई है कि व्यक्ति की मौत ट्रेन से गिरने के कारण हुई है। दुनावा चौकी प्रभारी सुनील सरियाम के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तत्काल मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मुलताई के सरकारी अस्पताल भेजा। मृतक के शरीर पर लगी चोटों की जांच की जा रही है, जिससे मौत के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सके। जांच में सामने आया है कि मृतक के पास से कोई पहचान पत्र या अन्य दस्तावेज नहीं मिले हैं। पुलिस आसपास के क्षेत्रों में पूछताछ और रेलवे विभाग से भी संपर्क में है ताकि यह पता लगाया जा सके कि मृतक किस ट्रेन का यात्री था।

एक एकड़ में की जा रही थी अवैध अफीम की खेती

फसल की कीमत दस लाख रुपए, खेत मालिक हिरासत में

बैतूल। पुलिस ने अवैध अफीम की बड़ी खेती का भंडाफोड़ किया है। रानीपुर थाना क्षेत्र के सडक़वाड़ा गांव में मुखबिर की सूचना पर की गई कार्रवाई में एक एकड़ जमीन पर अफीम के लाखों पौधे मिले हैं। पुलिस ने खेत मालिक भिखारीलाल को हिरासत में ले लिया है। एएसपी कमला जोशी और एसडीओपी रानीपुर रोशन जैन के नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में बैतूल कोतवाली समेत कई थानों की पुलिस टीम शामिल थी। मौके पर पाई गई अफीम की फसल में कुछ पौधों में फल लग चुके हैं, जबकि कुछ अभी फूल की स्थिति में हैं। वर्तमान में इस खेती की कीमत दस लाख रुपए से अधिक आंकी गई है, लेकिन मार्च तक फसल के पूरी तरह पकने पर यह कीमत करोड़ों रुपए तक पहुंच सकती थी। एसपी निश्चल एन झारिया के निर्देशन में पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है कि वह कब से यह अवैध खेती कर रहा था और इस नशीले पदार्थ की खरीद-बिक्री के लिए किन-किन लोगों से उसका संपर्क था। राजस्व विभाग की टीम भी मौके पर पहुंचकर जमीन का सर्वे कर रही है और फसली दस्तावेजों की जांच कर रही है।

मुलताई में 23 फरवरी को जिलास्तरीय स्वास्थ्य मेले में 16 से अधिक रोगों की होगी निशुल्क जांच एवं ऑपरेशन

बैतूल। अखिल भारतीय साहू वैश्य महासभा दिल्ली,युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के तत्वावधान में एवं चिरायु मेडिकल कॉलेज अस्पताल बैरागढ़ भोपाल के सहयोग से जिला स्तरीय स्वास्थ्य मेले का आयोजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई में 23 फरवरी दिन रविवार को सुबह 11 बजे से 4 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इस शिविर का आयोजन युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के रजत जयंती समारोह के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है। स्वास्थ्य शिविर को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शनिवार को पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रहलाद साहू, प्रभारी विकासखंड चिकित्सा अधिकारी श्रीमती सरिता कालभोर, चिरायु अस्पताल पीआरओ अभिषेक शुक्ला, गोपाल साहू, अजय साहू, सोनू साहू, रामदास देशमुख, गुणवंत घोड़े, चंद्रकला डोंगरे उपस्थित थे। जिसमें आयोजन समिति प्रमुख प्रहलाद साहू ने कहा की जिला स्तरीय स्वास्थ्य मेले में मेडिसिन कैंसर रोग, हड्डीरोग, स्त्री रोग , छाती एवं श्वास रोग, शिशु रोग, कृत्रिम गर्भाधान से गर्भधारण, नाक कान गला रोग, सर्जरी, चर्म रोग, मानसिक रोग, नेत्र रोग, दंत रोग, हृदयरोग, मुख बधिर बच्चों की जांच एवं नशा मुक्ति केंद्र की सुविधा भी प्रदान की जाएगी जाएगी। गोपाल साहू ने बताया कि शिविर का लाभ लेने के लिए बीपीएल कार्ड, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड, परिचय पत्र, समग्र आईडी, संबल योजना कार्ड लाना जरूरी है एवं बिना आयुष्मान कार्ड के भी ऑपरेशन कराए जाएंगे। चिरायु अस्पताल के अभिषेक शुक्ला ने कहा कि इस शिविर में जटिल रोग एवं ऑपरेशन के मरीजों को शिविर स्थल से चिरायु अस्पताल भोपाल तक लाया एवं वापस भेजा जाएगा इसमें निशुल्क आवास भोजन जांच ऑपरेशन एवं दवाइयां शामिल रहेगी। मुलताई साहू समाज अध्यक्ष सोनू साहब ने कहा शिविर में 60 से अधिक चिकित्सकों की टीम मरीजों का उपचार करेगी उन्होंने बताया कि शिविर में डिजिटल एक्सरे, सोनोग्राफी, एक डायबिटीज सभी प्रकार की खून की जांच एवं फेफड़ों की कार्य क्षमता का परीक्षण भी किया जाएगा।

126 केन्द्रों पर 25 फरवरी से शुरू होगी बोर्ड परीक्षाएं

विद्यार्थियों को 32 पेज की कॉपी में हल करना होगा प्रश्न पत्र, नहीं मिलेगी सप्लीमेंट्री कॉपी

संजय द्विवेदी, बैतूल। आगामी 25 फरवरी से माध्यमिक शिक्षा मंडल की बोर्ड परीक्षाएं शुरू होने जा रही हैं। इस बार माध्यमिक शिक्षा मंडल ने नियमों में परिवर्तन किया हैं, जिसके तहत अब परीक्षार्थियों को एक ही बार 32 पेज की उत्तर-पुस्तिका उपलब्ध कराई जाएगी। सप्लीमेंट्री पुस्तिका का ऑप्शन खत्म कर दिया गया है। परीक्षार्थियों को एक ही उत्तर-पुस्तिका में पूरे प्रश्न पत्र को हल करना होगा। नई व्यवस्था में एक परीक्षा, एक पेपर और एक कॉपी का फार्मूला लागू किया गया है। यह निर्णय परीक्षा व्यवस्था को सरल बनाने और अनावश्यक उत्तर पुस्तिका के उपयोग को रोकने के लिए लिया गया है। इस बदलाव से विद्यार्थियों को उत्तर पुस्तिका में जवाब लिखने के तरीके में बदलाव करना होगा। बिना योजना के उत्तर लिखने वाले परीक्षार्थियों को मुश्किलें आ सकती हैं, क्योंकि उत्तर पुस्तिका में पन्ने सीमित होंगे। यदि छात्र सोच-समझकर उत्तर नहीं लिखते हैं, तो कॉपी में जगह कम पड़ सकती है और उनके कुछ उत्तर अधूरे भी रह सकते हैं।

25 फरवरी से शुरू होगी बोर्ड परीक्षा - कक्षा 12वीं व 10वीं की बोर्ड परीक्षा 25 व 27 फरवरी से शुरु हो रही हैं। कक्षा 12वीं की परीक्षा 25 फरवरी से शुरू होकर 17 मार्च तक तो 10 वीं की 27 फरवरी से 13 मार्च तक आयोजित होंगी। इस बार जिले में 10वीं में नियमित 19 हजार 884 स्वाध्याय विद्यार्थी 1269 शामिल होगे। इसी तरह कक्षा 12वीं में लगभग नियमित 13697 स्वाध्याय 1675 विद्यार्थी सम्मिलित होगे। इस तरह से दोनों बोर्ड परीक्षाओं में 36 हजार 455 विद्यार्थी सम्मिलित होगे। परीक्षा के लिए जिले भर में 126 परीक्षा केन्द्र बनाएं गए है, जिसमें 6 केन्द्रों का संवेदनशील और 6 केन्द्रों को अतिसंवेदनशील श्रेणी में रखा है। परीक्षा के दौरान सभी परीक्षार्थियों को सिर्फ एक ही उत्तर पुस्तिका दी जाएगी, जिसमें उन्हें पूरे प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

अब स्मार्ट उत्तर देना होगा जरूरी- पहले कई

विद्यार्थी पन्ने भरने की होड में अनावश्यक रूप से लंबे उत्तर लिखते थे, जिससे कॉपी जल्दी भर जाती थी और उन्हें अतिरिक्त कॉपी लेनी पडती थी। लेकिन अब विद्यार्थियों को सोच-समझकर उत्तर लिखने की आदत डालनी होगी। सीमित पन्नों में ही उत्तर देने होंगे, जिससे उनके जवाबों की गुणवत्ता भी बेहतर होगी और परीक्षा में समय का भी सही उपयोग हो सकेगा। इस बदलाव से परीक्षा केंद्रों में अतिरिक्त कॉपी देने का झंझट खत्म हो जाएगा, जिससे परीक्षा संचालन सुचारू रूप से हो सकेगा। इससे उत्तर पुस्तिका के रखरखाव में भी सुधार होगा और मूल्यांकन प्रक्रिया को भी आसान बनाया जा सकेगा।

यह है नया बदलाव और इसके पीछे का कारण - स्कूल शिक्षा विभाग से जुडे अधिकारियों के अनुसार सप्लीमेंट्री कॉपी को मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ बांधना पडता था, जिससे कई बार पन्ने खुलने और बिखरने की समस्या सामने आती थी। इसके चलते उत्तर पुस्तिकाओं के रखरखाव में दिक्कतें आती थीं। पिछले वर्ष इसे प्रयोग के तौर पर अपनाया गया था, जिसमें यह व्यवस्था सफल रही। इसी आधार पर इस बार इसे पूरे राज्य में लागू कर दिया गया है। एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि परीक्षा केंद्रों में कई विद्यार्थी बिना जरूरत के भी अतिरिक्त कॉपी ले लेते थे। इससे अन्य विद्यार्थी मानसिक दबाव में आ जाते थे और उनके प्रदर्शन पर असर पडता था। अब यह होड पूरी तरह खत्म हो जाएगी और सभी विद्यार्थियों को समान रूप से परीक्षा देने का अवसर मिलेगा।

इनका कहना

शासन के निर्देशानुसार सप्लीमेंट्री उत्तर पुस्तिका पिछले वर्ष से ही देना बंद कर दी थी। विद्यार्थियों को 32 पेज की उत्तरपुस्तिका में ही प्रश्नपत्र हल करना होगा। इस बार 10वीं-12वीं की बोर्ड परीक्षा में 36 हजार 455 विद्यार्थी सम्मिलित होंगे।

- सुबोध शर्मा,
योजना अधिकारी, जिला शिक्षा कार्यालय बैतूल

21 से वितरित होगी बोर्ड परीक्षा की गोपनीय सामग्री

बैतूल। माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं को लेकर तैयारियां चल रही हैं। आगामी 21 फरवरी से बोर्ड परीक्षाओं में इस्तेमाल होने वाली गोपनीय सामग्री का वितरण किया जाएगा। परीक्षा प्रभारी सुबोध शर्मा ने बताया कि 25 फरवरी से कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा प्रारंभ होने वाली है। परीक्षा को लेकर गोपनीय सामग्री का वितरण होना है। कोठीबाजार उत्कृष्ट विद्यालय से 21 फरवरी को गोपनीय सामग्री का वितरण किया जाएगा। सामग्री वितरण के दौरान कलेक्टर प्रतिनिधि सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी मौजूद रहेंगे। कडी सुरक्षा के बीच सामग्री का वितरण किया जाएगा। परीक्षा सामग्री को केन्द्राध्यक्षों को दी जाएगी। इसके बाद केन्द्राध्यक्ष सीधे सामग्री को कडी सुरक्षा के बीच रखेंगे। किसी प्रकार से कोई गडबडी ना हो, जिसे ध्यान में रखते हुए अधिकारी सामग्री वितरण पर पैनी नजर रखेंगे। बोर्ड परीक्षाओं के लिए इस्तेमाल होने वाली गोपनीय सामग्री की ऐप के माध्यम से मॉनिटरिंग की जाएगी। सीधे भोपाल से अधिकारी नजर बनाए रखेंगे। बोर्ड परीक्षा प्रभारी सुबोध शर्मा ने बताया कि 21 फरवरी को कडी सुरक्षा और निगरानी के बीच गोपनीय सामग्री का वितरण किया जाएगा। इस दौरान कलेक्टर प्रतिनिधि सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहेंगे।

ग्रामीण परिवेश से परिपूर्ण होम स्टे बैतूल की सभ्यता और संस्कृति से कराएंगे रूबरू: केंद्रीय राज्यमंत्री उईके

केंद्रीय राज्य मंत्री उईके ने ग्राम बांचा और बज्जर वाड़ा में ग्रामीण होम स्टे का किया उद्घाटन

बैतूल। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड की जनजातीय पर्यटन योजना के अंतर्गत घोड़ाडोंगरी विधानसभा के आदर्श ग्राम बांचा और बज्जर वाड़ा में निर्मित ग्रामीण होम स्टे का शनिवार को उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गा दास उईके, कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष मोहन नगर, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा बाई उईके, पूर्व विधायक मंगल सिंह धुर्वे, जनपद सदस्य ग्राम सरपंच उपस्थित थे। इस अवसर पर मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड के सहायक निदेशक एस के पांडे उपस्थित थे। ग्राम बांचा में आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम मुख्य अतिथियों ने भगवान भोलेनाथ के छायाचित्र समक्ष दीप प्रज्वलित कर समारोह की शुरुआत की। इस दौरान आदर्श ग्राम समिति बांचा ने अतिथियों को आदिवासी संस्कृति की कलाकृतियां, जैविक गुड़ भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं ने गोंडी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी।

होम स्टे से आदिवासी संस्कृति और ग्रामीण परिवेश को मिलेगा बढ़ावा- कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री उईके ने कहा कि जिले का ग्राम बांचा ऐसा पहला गांव है, जो सौर ऊर्जा से खाना बनाता है। लेकिन अब इस ग्राम में ग्रामीण होम स्टे

होने से इसकी पहचान देश और विदेश में होगी। यहां आने वाले पर्यटक आदिवासी संस्कृति के लोकनृत्य, लोकगीत, पूजा-पाठ, बोली-भाषा, रीति-रिवाज, परंपराएं से अवगत होंगे। उन्हें ग्रामीण परिवेश के तहत खेती करना, फसल काटना, बुआई करने के बारे में जानकारी मिलेगी। होम स्टे के माध्यम से जिले में आदिवासी संस्कृति और ग्रामीण परिवेश को बढ़ावा दिया जाएगा। ग्रामीणों को होम स्टे के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराए जाएंगे। होम स्टे में आने वाले पर्यटक प्राकृतिक वातावरण, वन, ग्रामीण परिवेश में शांतिपूर्वक समय बिता सकेंगे। इस दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईके ने ग्राम बांचा में सोलर स्ट्रीट लाइट लगवाने की घोषणा की।

ग्रामीण होम स्टे में सुकून के पल बिता सकेंगे पर्यटक

मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नगर ने कहा कि ग्राम बांचा और बज्जर वाड़ा में होम स्टे बनकर तैयार हैं, जहां अब पर्यटक सुकून के पल बिता सकेंगे। पर्यटकों को गांव की संस्कृति और जनजीवन को करीब से जानने का मौका मिलेगा और पारंपरिक व्यंजन भी मिलेंगे। उन्होंने कहा कि भले ही शहरों में बड़े-बड़े होटल व रिसॉर्ट बन गए है, लेकिन आज भी एकांत में रहकर रचनात्मक कार्य होते है। साथ ही मन की शांति के लिए एकांत ज्यादा पसंद किया जाता है। उन्होंने कहा कि गांव के भाग्य के द्वार खोलना हो तो हमें सर्वप्रथम गांव में शिक्षा के द्वार खोलना आवश्यक है। ग्राम बांचा पहले शिक्षित, संगठित बना फिर स्वच्छ बना। ग्राम बांचा सोलर विलेज, वॉटर विलेज के बाद अब टूरिज्म गांव के नाम से जाना जाएगा। ग्राम में पर्यटन होमस्टे होने से अब गांव का नाम इंटरनेट पर होगा।

ग्रामीणों का खान-पान, रीति रिवाज, रहन-सहन सब शुद्ध- विधायक श्रीमती उईके

कार्यक्रम में घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा बाई उईके ने कहा कि हमें अपनी परंपरा, रीति-रिवाज, संस्कृति भगवान से मिली है। गांव में ग्रामीणों का खान-पान, रीति रिवाज, रहन-सहन शुद्ध है। इसलिए पर्यटन विभाग ने ग्राम में जागरूकता फैलाने और पर्यटकों का गांव की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए ग्रामीण होमस्टे बनाया है। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों को अपनी बोली, भाषा, संस्कृति को बचाए रखने के लिए प्रेरित किया।

बैलगाड़ी से पहुंचे होम स्ट

मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा विकसित होम स्टे का उद्घाटन करने पहुंचे अतिथियों का स्वागत गांव में ढोल-बाजों के साथ किया गया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री श्री उईके को कार्यक्रम स्थल से होम स्टे तक बैलगाड़ी से ले जाया गया। खूबसूरत तरीके से सजी यह बैलगाड़ी पर्यटन एक्टिविटी का हिस्सा है। बैलगाड़ी के सफर से सब प्रसन्न दिखाई दिए। गांव में पारंपरिक रूप से बैलगाड़ी को सजाया गया। साथ ही लोक संस्कृति की ढोल की थाप ने सभी का मन मोह लिया। इस दौरान राज्य मंत्री का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात केंद्रीय मंत्री मंत्री श्री उईके ने फीता काटकर ग्रामीण होम स्टे का शुभारंभ किया।

जल जीवन मिशन के प्रचार रथ को दिखाई हरी

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईके, घोड़ाडोंगरी विधायक और मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री नागर ने लोक स्वास्थ्य यांत्रिक विभाग बैतूल के जल जीवन मिशन प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह प्रचार रथ घोड़ाडोंगरी विकासखंड के ग्रामीण अंचलों में जल जीवन मिशन की जानकारी तथा जल जीवन से जुड़ी योजनाओं की जानकारी देगा।

वंशिका का जेईई में चयन, जिला शिक्षा अधिकारी ने किया सम्मानित

बैतूल। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज की छात्रा वंशिका सूर्यवंशी ने जेईई प्रथम प्रयास में 95.42 स्कोर अंक प्राप्त कर शासकीय विद्यालय में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। होनहार छात्रा की इस उपलब्धि पर जिला शिक्षा अधिकारी अनिल कुशवाह, सहायक योजना समन्वयक सुबोध शर्मा, सहायक संचालक भूपेंद्र वरकड़े, जिला जेईई-नीट प्रभारी प्राचार्य नीलेश्वर कालभोर द्वारा छात्रा को शाला में सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य ललित लिल्होरे तथा समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं एवं स्टाफ उपस्थित था। वंशिका ने बताया कि

उसकी उपलब्धि में उनके पालक और शाला के शिक्षकों के मार्गदर्शन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बिना किसी प्राइवेट कोचिंग के शासकीय विद्यालय मे पढ़ाई करके स्वयं तैयारी कर यह सफलता पाई है। उल्लेखनीय है कि विगत 3 वर्षों से शासकीय शालाओ में जेईई-नीट की निःशुल्क कोचिंग संचालित की जा रही है, जिसके जिला प्रभारी नीलेश्वर कालभोर ने बताया कि इस वर्ष जिले में जेईई प्रथम प्रयास में ही सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग ,अनुसूचित जाति, तथा अनुसूचित जनजाति के 51 विद्यार्थियों के परसेंटाइल 50 से ऊपर आए हैं जो की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। जिला स्तरीय समिति में जेईई-नीट के विषय गणित, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान तथा भौतिक शास्त्र के विषय प्रभारी शिक्षक भोजराज पोटफोड़े, उमेश शर्मा, घनश्याम वरवडे तथा मदन गोपाल सूर्यवंशी है, जो की जिले के समस्त विषय शिक्षकों की सहायता से अध्ययन विषय सामग्री तथा प्रश्न पत्र का निर्माण करते हैं ।

तकनीक की सहायता से कर रहे मार्गदर्शन

जिला प्रभारी द्वारा उनकी स्क्रीनिंग की जाती है तथा इन प्रश्नपत्रों को जिले के विभिन्न सरकारी विद्यालयों में पदस्थ कंप्यूटर ऑपरेटर टाइप करते हैं तथा जिला प्रभारी को भेजते हैं। प्रश्नपत्र प्रत्येक विकासखंड के प्रभारी शिक्षक को व्हाट्सएप पर भेजे जाते हैं, फिर विकासखंड प्रभारी शिक्षक अपने विकासखंड मे आने वाले समस्त हायर सेकेंडरी विद्यालयों के शाला प्रभारी को व्हाट्सएप पर प्रश्न पत्र भेजते हैं जो इनके प्रिंटआउट निकाल कर विद्यार्थियों को प्रदान करते हैं तथा ओएमआर शीट पर प्रश्न पत्र हल करवाते हैं। सभी विद्यालयों में प्रश्न पत्र हल होने के पश्चात एक निश्चित समय पर सम्पूर्ण जिले मे जिला प्रभारी द्वारा आंसर शीट व्हाट्सएप पर भेजी जाती है, जिसके आधार पर ओएमआर शीट का मूल्यांकन शाला के शिक्षक शिक्षिकाएं करते हैं। मूल्यांकन के पश्चात जिले भर के समस्त विद्यार्थियों की जानकारी का डाटा गूगल ड्राइव से जिला स्तरीय समिति को भेजा जाता है। जिससे जिले भर मे पढ़ाई के साथ-साथ जेईई-नीट की तैयारी कर रहे हैं विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन जिला स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है तथा उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किए जाते हैं।

जिले के सभी नगरीय क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं से वंचित 271 कॉलोनियों का होगा विकास, रहवासियों को मिलेगी सुविधा

कलेक्टर सूर्यवंशी के निर्देशन में अवैध कॉलोनियों के नियमितीकरण की बड़ी कार्यवाही

बैतूल। जिले के सभी 10 नगरीय क्षेत्रों में वर्ष 2016 तक अस्तित्व में आई 271 अवैध कॉलोनियों के नियमितीकरण के लिए अंतिम प्रकाशन किया गया है। नियमितीकरण से मूलभूत सुविधाओं से वंचित रही इन कॉलोनियों में पेयजल, सड़क, बिजली, सीवरलाइन इत्यादि का सुनियोजित और सुव्यवस्थित विकास हो सकेगा। कलेक्टर बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशन और सतत मॉनिटरिंग का परिणाम रहा कि अवैध कॉलोनियों के नियमितीकरण की बड़ी कार्यवाही बैतूल जिले में हुई हैं। जिसका सीधा फायदा धोखाधड़ी के शिकार हुए इन कॉलोनियों के रहवासियों को मिलेगी और क्षेत्र के विकास को दिशा मिलेगी।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने इन नगरीय निकायों में अवैध कॉलोनियों के चिन्हांकन और रेगुलाइजेशन के लिए संयुक्त दल का गठन किया गया। जिसमें संबंधित

क्षेत्र के एसडीएम, मुख्य नगरपालिका अधिकारी, तहसीलदार, उप पंजीयक , टाऊन एंड कंट्री प्लानिंग के अधिकारी शामिल रहें। जिनके द्वारा स्थानीय जनप्रतिनिधियों के समन्वय कर इन कॉलोनियों की जांच कर इनके चिन्हांकन किया गया और यहां विकास की संभावनाओं को तलाशा।

अवैध कोलोनियों को निर्माण करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध पुलिस थाने में शिकायत भी दर्ज की गई है। ऐसी कोलोनियां जिनमें निम्न आय वर्ग के 70 प्रतिशत से अधिक निवासी निवास करते है। इनमें विकास शुल्क का न्यूनतम 20 प्रतिशत कॉलोनियों के निवासियों से वसूल किया जाएगा और 80 प्रतिशत तक की राशि संबंधित निकाय द्वारा वहन की जाएगी। इसके अतिरिक्त अन्य कॉलोनियों के लिये 50 प्रतिशत विकास राशि कॉलोनी वासियों और 50 प्रतिशत राशि संबंधित निकाय वहन करेगी। विकास शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख सक्षम प्राधिकारी द्वारा विकास शुल्क अवधारित करने के पश्चात निश्चित की जाएगी, जिसकी सूचना भी पृथक से जारी की जाएगी। बता दे कि नगरीय निकायों द्वारा इन कॉलोनियों में शेष बचे प्लाटों का विक्रय कर कॉलोनियों में विकास कार्य किया जाएगा। परियोजना अधिकारी जिला शहरी विकास अभिकरण बैतूल श्री ओमपाल सिंह भदौरिया ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन, नगरीय प्रशासन द्वारा 13 जनवरी 2022 में प्रकाशित नियम के तहत जिले में 2016 तक अस्तित्व में आयी कॉलोनियों के निकायवार ले-आउट एवं अभिन्यास तैयार कराये जाकर कोलोनियों को नागरिक अधोसंरचना प्रदान करने की कार्यवाही की गई और प्रकाशन नगर पालिकाओं के माध्यम से जारी किया गया है। उक्त प्रकाशन की अवधि में आपत्ति प्राप्त होने पर उनका निराकरण नियमानुसार किया जाएगा और कॉलोनियों को नागरिक अधोसंरचना प्रदान की जाएगी।

माला बेचने वाली मोनालिसा सिनेमा की नई सनसनी !

महाकुंभ मेले की वजह से एक आम सी लड़की मोनालिसा की जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। मोनालिसा ने अपनी जिंदगी के एक नए सफर का आगाज किया है। सनसनी यह भी है कि मोनालिसा मुंबई में 7 स्टार होटल का मजा ले रही है। मोनालिसा लगातार फ्लाइट से घूम रही हैं। मोनालिसा एक इवेंट का हिस्सा बनने केरल भी गई।

प्रयागराज महाकुंभ में माला बेचने आई एक साधारण सी लड़की मोनालिसा पहले सोशल मीडिया की सनसनी बनी और फ़िल्मी दुनिया तक पहुंच गई। उनकी तस्वीरें और वीडियो वायरल होने के बाद लोग उनकी खूबसूरती के दीवाने हो गए थे उनकी इसी पॉपुलरिटी ने उन्हें फिल्म इंडस्ट्री का

टिकट दिला दिया। अब मोनालिसा एक्ट्रेस बनने के अपने सफर पर निकल चुकी हैं। वायरल वीडियो और फोटो ने डायरेक्टर सनोज मिश्रा का ध्यान खींचा और उन्होंने खुद मोनालिसा के गांव जाकर उन्हें अपनी फिल्म में काम करने का ऑफर दिया। यह सुनकर मोनालिसा ने भी अपने नए करियर की शुरुआत करने का फैसला किया और मुंबई का रुख किया।

महाकुंभ में आई एक साधारण सी लड़की जिसने लोगों को ऐसा इंप्रेस किया, कि रातों रात इंटरनेट पर सनसनी बन गई। इसने न सिर्फ यूजर्स को बल्कि फिल्म इंडस्ट्री का ध्यान भी अपनी ओर खींचा। वो कोई और नहीं महाकुंभ में माला बेचने आई मोनालिसा है, जिसकी खूबसूरत नीली आंखों की सोशल मीडिया पर जमकर तारीफ हुई।

इसके बाद मोनालिसा को न सिर्फ फिल्म मिली, बल्कि कई ऐड और प्रमोशन के ऑफर भी मिले, ऐसे में वायरल गर्ल के इन दिनों कई फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर हंगामा मचा रहे हैं। इस वीडियो में मोनालिसा गाना गाती नजर आ रहीं हैं, उन्होंने अपनी सुरीली आवाज से सभी का दिल जीत लिया है. उनकी मधुर आवाज में गाया गया गाना 'तेरे नयना...' सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. मोनालिसा की इस गायकी को सुनकर लोग उनकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं।

मुंबई पहुंचने के बाद मोनालिसा ने एक्टिंग

की ट्रेनिंग लेनी शुरू कर दी। ट्रेनिंग पूरी होते ही वे अपनी पहली फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगी। इस दौरान उनकी कई तस्वीरें सामने आई, जिनमें उनका नया ग्लैमरस लुक नजर आ रहा है। उनकी खूबसूरती की तारीफ हो रही है। कहा जा रहा कि उन पर ग्लैमर का रंग धीरे-धीरे चढ़ने लगा। मोनालिसा की पॉपुलैरिटी बढ़ने के साथ ही उनके कुछ डीपफेक एआई वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। इन वीडियो में मोनालिसा को बेहद ग्लैमरस अवतार में दिखाया गया। इससे कई लोग कंफ्यूज हो रहे हैं। हालांकि, ये वीडियो पूरी तरह से एडिट किए हुए हैं।

मोनालिसा की पहली फिल्म 'डायरी ऑफ मणिपुर' होगी, जिसमें वे लीड रोल निभाएंगी। फिल्म में काम करने से पहले उनका पूरा मेकओवर किया गया, जिससे वे और भी खूबसूरत नजर आ रही हैं। हाल ही में वायरल हुई तस्वीरों में मोनालिसा ग्रीन सूट और रेड दुपट्टे में नजर आईं, जिसे देखकर उनकी जमकर तारीफ हुई। महाकुंभ की यह साधारण लड़की अब फिल्मों की नई स्टार बनने की राह पर चल पड़ी। सोशल मीडिया पर उनकी हर अपडेट का फैंस को बेसब्री से इंतजार है।

प्रतीक बब्बर ने दूसरी शादी में पिता को नहीं बुलाया

एक्टर प्रतीक बब्बर सुपरस्टार रही दिवंगत एक्ट्रेस स्मिता पाटिल और राज बब्बर के बेटे हैं। उन्होंने 14 फरवरी यानी वेलेंटाइन डे के मौके पर गर्लफ्रेंड प्रिया बनर्जी से अपनी मां के घर में शादी की। इस दौरान प्रतीक ने अपने पिता राज बब्बर और उनके बच्चों को शादी का न्योता तक नहीं दिया। इसकी चर्चा सोशल मीडिया पर जोरों से हो रही। इस बीच प्रतीक के सौतेले भाई आर्य बब्बर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया, जो सुर्खियों में आ गया। इसमें वह फैमिली में दो शादियों के ऊपर बात करते हुए नजर आ रहे हैं।

वीडियो को आर्य बब्बर ने शेयर किया, जिसके कैप्शन में लिखा 'बब्बर ने फिर शादी कर ली? पर बाप को शादी में नहीं बुलाया प्रतीक बब्बर ने।' जारी वीडियो में आर्य कहते नजर आ रहे हैं 'मैं मानता हूं कि पापा ने दो दो

शादियां की। दीदी ने दो-दो शादी की। अब मेरा भाई दो-दो शादी कर रहा है। यहां तक की मेरा जो डॉगी है उसकी भी दो-दो गर्लफ्रेंड हैं, तो अब मैं भी करूं! मैं थोड़ा सा फंसता जा रहा हूं। क्या है न दूसरी शादी करने में प्रॉब्लम नहीं है। कल हो जाएगी, लेकिन मैं तलाक की जटिलताओं से गुजरने के लिए बहुत आलसी हूं।

इस दौरान वहां मौजूद ऑडियंस खूब हंसती हुई नजर आ रही है। हालांकि, यह क्लिप पूरा नहीं है। लेकिन, लोग कमेंट सेक्शन में खूब रिएक्शन देते हुए नजर आ रहे हैं। राज बब्बर ने दो शादियां की। उनकी पहली पत्नी नादिरा बब्बर हैं, जिनसे 1975 से 1983 तक रिश्ता चला। वहीं उनके दो बच्चे जूही और आर्य बब्बर हैं। जबकि, 1983 में एक्टर ने एक्ट्रेस स्मिता पाटिल से शादी की, जिनका 1986 में निधन हो गया। कपल का एक बेटा प्रतीक बब्बर है, जो पेशे से एक्टर हैं।

रियल बॉक्स

मनोरंजन के बहाने सामाजिक मुद्दों पर भी चोट

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों के बारे में आम धारणा है कि ये मनोरंजन के मकसद से देखी जाती हैं। फिल्मकार भी दर्शकों का मनोरंजन करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। इनमें रहस्य-रोमांच होता है, कॉमेडी होती है, प्रेम कहानियां होती है, कुछ फ़िल्में डराती भी हैं और दर्शकों की पसंद वाले हर विषय को छूने की कोशिश होती है। लेकिन, अब दर्शक कुछ नया देखना चाहते हैं। नए दौर के दर्शकों को पुराने ढर्रे के कथानक रास नहीं आते। यही वजह है कि अब कई नए विषयों पर फ़िल्में बनने लगी। हाल की फिल्मों में समाज की विकृतियों और मुद्दों पर भी काफी ध्यान दिया जाने लगा। कई सामाजिक मुद्दों को भी अब फिल्मों में उठाया जाने लगा, जो अभी तक संभव नहीं था। अब सामाजिक मुद्दों को छूने के लिए फिल्म को गंभीर बनाने की कोशिश नहीं होती।

शाहरुख़ खान की फिल्म 'जवान' इसका सबसे अच्छा उदाहरण है, जो एक एक्शन फिल्म थी। पर, जिसका मूल विषय किसानों की कर्ज माफी और उनकी आत्महत्या जैसे संवेदनशील मुद्दा है। यह फिल्म किसानों के आत्महत्या, फसलों के उचित दाम और भ्रष्टाचार से जुड़ी सामाजिक घटनाओं पर प्रकाश डालती है। हाल की फिल्मों पर नजर डालें तो लवयापा, द मेहता बॉयज़, देवा और स्वीट ड्रीम्स ऐसी ही फ़िल्में हैं। जॉन अब्राहम और शरवरी वाघ अभिनीत फिल्म 'वेदा' में जातिवाद के आधार पर भेदभाव का मुद्दा उठाया गया। शरवरी वाघ बॉक्सिंग सीखना चाहती है, पर उसकी इच्छा को गांव प्रधान पूरी नहीं होने देता। उसे छुआछूत का भी सामना करना पड़ता है। आलिया भट्ट की फिल्म 'जिगरा' में घरेलू हिंसा का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया। इसमें आलिया भट्ट के किरदार के साथ उसका पति अक्सर मारपीट करता रहता है।

फिल्मों के इतिहास के पन्ने पलटे जाएं तो जब से सिनेमा का सफर शुरू हुआ, नए विषयों का हमेशा अभाव देखा गया। शुरुआत में धार्मिक कथाओं पर फ़िल्में बनाकर दर्शकों को जोड़ने की कोशिश हुई। फिर राजा-महाराजाओं की कहानियों, राजमहलों के षड्यंत्रों पर खूब फ़िल्में बनी। बाद में जब आजादी के संघर्ष की हवा चली तो उस पर भी कुछ फ़िल्में बनी! किंतु, आजादी के बाद तो लम्बे समय तक ऐसी फिल्मों का दौर चला जिसमें संघर्ष की गाथाओं को अलग-अलग तरीके से दर्शाया गया। जब ये दौर ख़त्म हुआ तो बाद की फ़िल्में प्रेम, बदला, राजनीति, धर्म, कॉमेडी और पारिवारिक विवादों तक सीमित हो गई। इस दायरे से बाहर भी फ़िल्में बनी, पर उनकी संख्या सीमित थी। 40 के दशक में गंभीर और सामाजिक समस्याओं से जुड़े मुद्दों को केंद्र में रखकर फिल्मों के निर्माण किया गया। 50 के दशक की फिल्मों का दौर आदर्शवादी रहा। जबकि, 60 का समय काफी कुछ अलग था। जो रोमांटिक फिल्मों का ट्रेंड राज कपूर ने शुरू किया था, वह इस दशक में छाया रहा था। लेकिन, 70 का दशक की फिल्मों ने व्यवस्था के प्रति असंतोष और विद्रोह को ज्यादा दर्शाया।

80 के दशक में फिल्मकारों को यथार्थवाद दिखाने का जुनून चढ़ा, जबकि 90 का समय आर्थिक उदारीकरण दर्शाने वाली फिल्मों का रहा। दरअसल, सिनेमा समाज की स्थिति दर्शाने का सबसे सशक्त माध्यम रहा है। फिल्मों से ही आजादी के आंदोलन की कहानी, राष्ट्रीय एकता का संघर्ष, वैश्विक समाज की सच्चाई और देश के ताजा हालात की कथाओं को फिल्माया गया। इस सिनेमा से ही बदलते भारत की झलक भी मिली है। इस तरह के बदलाव वाले विषय को ढूंढते हुए एक समय ऐसा भी आया, जब कला फिल्मों का दौर चला और अंकुर, मंथन, निशांत जैसे प्रयोग हुए। जमींदार के खूंटे से बंधी दलित राजनीति के प्रपंच को श्याम बेनेगल ने 'निशांत' और 'मंथन' से दिखाया। लेकिन, उन हलकों में प्रतिशोध की ताकत पैदा की प्रकाश झा के नए सिनेमा ने! 'दामुल' यदि उसका बेहतरीन उदाहरण है, तो 'अपहरण' उसी मानसिकता वाले औजारों से अलग तेजी से बदती राजनीति के हिंसक प्रतिरूपों की पहचान बना। बाद में इसे प्रकाश झा ने 'राजनीति' में और पैना किया। लेकिन, दर्शकों को हमेशा कुछ नया चाहिए, इसीलिए फिल्मकारों ने बरेली की बरफी, हिंदी मीडियम, टॉयलेट - एक प्रेम कथा, तनु वेड्स मनु - रिटर्न्स, द गाज़ी अटैक, शुभमंगल सावधान, फिल्लौरी, लिपस्टिक अंडर माय बुरका और 'नाम शबाना' जैसे प्रयोग किए।

इस बीच राजनीतिक फ़िल्में भी बनी और दर्शकों ने इसमें रूचि भी दिखाई। 'कलयुग' इस श्रेणी में मिसाल थी, जिसने दर्शकों को आकर्षित किया। फिर 'सत्ता' जैसी फिल्मों ने राजनीति के समीकरण में स्त्री-विमर्श के हस्तक्षेप से नया मोर्चा संभाला। बाद में मणिरत्नम, मृणाल सेन, गुलजार की तरह विशाल भारद्वाज और प्रकाश झा ने ठेठ राजनीतिक फिल्मों में छौंक लगाई। राजनीति और पारिवारिक रिश्तों को जोड़कर गुलजार ने 'आंधी' जैसी सफल फिल्म बनाकर फिर राजनीतिक साजिशों की कॉमिक सिचुएशन पर 'हु तू तू' और विशाल भारद्वाज के साथ मिलकर आतंकवाद के रिश्तों को पनपाती 'माचिस' का निर्माण किया। लेकिन, हिंदी सिनेमा में राजनीति की बिसात पर आज रंग दे बसंती, पार्टी, युवा या ए

वेडनेसडे और 'ब्लैक फ्राई डे' जैसी फिल्मों की जरुरत ज्यादा है। 'ट्रेन टू पाकिस्तान' या 'अर्थ 1947' से ज्यादा आज की राजनीति का नया आकलन करने वाली 'परजानिया' जैसी फिल्मों को ज्यादा पसंद किया गया। क्योंकि, यदि ऐसा नहीं हुआ, तो राजनीतिक सिनेमा के नए विषयों वाले तेवर सामने कैसे आएंगे!

'राजनीति' से पहले राजनीति के नए आयाम 'गुलाल' ने दिखाए। युवा पीढ़ी के प्रतिबिंबों को झलकाती एक से एक बेहतर तस्वीरें रंग दे बसंती, लगे रहो मुन्नाभाई, दिल्ली-6 तक में दिखाई और आजमाई भी गई। राजनीतिक विषयों पर जब भी कोई फिल्म आती है, परदे पर उतरने से पहले ही वह चर्चित हो जाती है। लोगों में उत्सुकता जगा जाती है। लेकिन, प्रकाश झा की फिल्म का नाम 'राजनीति' होते हुए भी इस फिल्म को लेकर कोई कॉन्ट्रोवर्सी नहीं हुई! जबकि, गांधी परिवार को लेकर राजनीति पर बनी फिल्में रिलीज के पहले ही खूब पब्लिसिटी बटोरती हैं। बरसों पहले आई गुलजार की 'आंधी' को भी जमकर कॉन्ट्रोवर्सी हुई थी। क्योंकि, उसमें सुचित्रा सेन को इंदिरा गांधी से मिलते जुलते किरदार और गेटअप में प्रस्तुत किया गया था। मधुर भंडारकर की फिल्म 'इंदू सरकार' को लेकर भी यही सब हुआ। इसमें नील नितिन मुकेश का लुक संजय गांधी से मिलता जुलता था। पर, जितना विवाद हुआ, उतनी फिल्म चली नहीं! ये नितांत सत्य है कि सौ साल बाद भी भारतीय सिनेमा दायरे अपने से बाहर नहीं आ पाया! कुछ नया करने की उसकी छटपटाहट तो दिखती है, पर कोई कोशिश करना नहीं चाहता! सब प्रेम कहानियाँ, एक्शन या कॉमेडी बनाकर सौ करोड़ के क्लब शामिल होने के सपनों की गिरफ्त से ही बाहर नहीं निकल पा रहे!

सिनेमा को कमर्शियल नजरिए से देखने वाला तबका इसे आसान बनाकर 'फना' जैसी फिल्म बनाता है। दूसरा बौद्धिक खेमा सिनेमा की अवधारणा में अचानक कैद होकर-शेक्सपियर ड्रामे के रूपांतरण का मजा लेता है! उसे 'मकबूल' या 'ओंकारा' के अपराध जगत में भी प्रेम और राजनीति की गठजोड़ के छद्म रूपक की नई लीला रचकर संतुष्टी होती है। जबकि, हिंदी सिनेमा को शेक्सपियर के नाटकों से कहीं ज्यादा हिंदी उपन्यासों के कथानक की दरकार होनी चाहिए। सवाल खड़ा होता है कि क्या उन उपन्यासों में नई पटकथाओं की गुंजाइश नहीं है, जो नया सिनेरियो प्रस्तुत कर सकें। दर्शकों सामने मनोरंजन का नया मसाला पेश करने की कोशिश में कई तरह के प्रयोग हुए और हो भी रहे हैं। फिल्मकारों ने कारोबार जैसे गरिष्ठ विषय को भी फिल्म बनाने के लिए चुना और इसमें सफल भी हुए। जबकि, वास्तव में ऐसे विषयों पर फिल्म बनाना आसान नहीं होता।

इस बीच कुछ ऐसे फिल्में भी बनाई गई जो कारोबार शुरू करने के लिए प्रेरित करती हैं। 2010 में आई 'बैंड बाजा बारात' वैसे तो एक रोमांटिक फिल्म थी। इसमें अनुष्का शर्मा और रणवीर सिंह ने अच्छी एक्टिंग भी की। इस फिल्म में वेडिंग प्लानर के काम में आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया गया था। इस काम में आने वाले उतार-चढ़ाव को बारीकी से मनोरंजक ढंग से फिल्माया। ऐसी ही फिल्म 'गुरु' थी, जो वास्तव में धीरूभाई अंबानी की रियल स्टोरी पर आधारित थी। ये भी एक नया विषय था, जिसमें गुजरात के एक छोटे से गांव से निकले ऐसे नौजवान की कहानी थी, जो अभाव को पछाड़ते हुए एक दिन सबसे अमीर लोगों में शामिल होता है। परिस्थितियों से हार न मानने वाले जुझारू व्यक्ति की ये कहानी प्रेरणा देने वाली थी। इसमें अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय बच्चन ने मुख्य भूमिका निभाई थी।

'रॉकेट सिंह' भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसमें एक कॉलेज स्टूडेंट्स को ठोकर खाकर खुद की मालिक बनते दिखाया गया। इसमें रणबीर कपूर की मुख्य भूमिका थी। इस फिल्म में रणवीर सेल्समैन रहता है, जिसके कामकाज की कद्र नहीं होती। तंग आकर वो अपना खुद का काम शुरू करता है, जो आगे चलकर एक बड़ी कंपनी का रूप ले लेता है। 'कॉरपोरेट' भी ऐसी ही फिल्म थी। ये फिल्म कुछ खास तो नहीं कर पाई, पर फिल्म ने कॉरपोरेट जगत की कई कड़वी सच्चाइयों से रूबरू जरूर करवाया। 'बदमाश कंपनी' भी इसी ट्रेंड की फिल्म थी, जिसमें शाहिद कपूर और अनुष्का शर्मा के बहाने कई बिजनेस आइडिया सामने लाने की कोशिश की गई थी। यह फिल्म मिडिल क्लास के कुछ दोस्तों पर केंद्रित है, जो बड़ा आदमी बनने की कोशिश में रहते है। इसके लिए कई रास्ते तलाशते रहते हैं। फिल्म में कारोबार के कई गलत तरीकों को दिखाया गया, पर फिल्म के विषय में नयापन था। अभी फिल्मकारों की नए विषय खोजने की छटपटाहट ख़त्म नहीं हुई! सौ साल से ये चल रही है और अनवरत चलती भी रहेगी! क्योंकि, हर विषय में कहीं न कहीं मनोरंजन छुपा होता है! लेकिन, सबसे बड़ी बात यह कि अब सिनेमा समाज के मुद्दों को भी अपने कथानक बनाने लगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

नायिका की डुबकी और दर्शकों की पुण्य प्राप्ति

अशोक जोशी

इन दिनों देश में डुबकियों का माहौल है। देश की आधी से ज्यादा आबादी प्रयागराज के महाकुंभ में डुबकी लगा चुकी है। राजनीतिक परिदृश्य में भी नई दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी

राजनीतिक भँवर में डुबकी लगाकर कर उबर नहीं पाई है। लेकिन, फिल्मों में जब कभी निर्माता निर्देशक को दर्शकों को नायिका के उघड़े बदन का पुण्य लाभ देना होता है। वह नायिकाओं को नदी, तालाब से लेकर पोखर में कहीं न कही डुबकियां लगवा देता है और दर्शक भी भीगी नायिका का देह-दर्शन कर धन्य हो जाता है!

हिंदी फिल्मों के वे निर्माता और निर्देशक जिन्होंने नायिकाओं को डुबकियां लगाने का फार्मूला न केवल ईजाद किया, बल्कि सफलतापूर्वक उसका उपयोग लागू कर बॉक्स ऑफिस पर सिक्कों की बरसात करवाई है। इस तरह के फिल्मकार जानते हैं कि यदि दर्शकों की आंखों को तर कर दिया जाए तो वह परदे पर भीगी भीगी नायिका को देखकर कुम्भ स्नान से ज्यादा पुण्य कमा लेंगे। वैसे तो फिल्मों में सबसे ज्यादा नायिकाएं नदी में ही डुबकियां लगाते हुए सखियों के साथ जल क्रीड़ा करती दिखाई देती है, लेकिन जब नदी का बैकग्राउंड नहीं मिलता तो वह उसे कभी बारिश से तो वह ठंडे पानी से बाथरूम में पवित्र स्नान करते दिखा दी जाती है।

नदियों में नहाने वाली नायिकाओं में साधना का जिक्र करना लाजमी है, जो फिल्म 'राजकुमार' में जल क्रीड़ा करते हुए गाती है जल की मछलियां जल में है प्यासी। तो 'सावन की घटा' में मुमताज का नदी में सखियों के साथ स्नान कर गाते देखना कि आज कोई प्यार से दिल की बातें कह गया मैं तो आगे बढ़ गई पीछे

किनारा रह गया। ब्लेक एण्ड व्हाइट के दौर में पद्मिनी डुबकियां लगाते हुए गाती है इन आंखों का रंग हो गया शराबी। मीना कुमारी भी 'दिल अपना प्रीत पराई' में जलक्रीड़ा करते हुए गाती है शीशा ए दिल इतना न उछालो तो दर्शकों के दिल उछलने लगते हैं। किसी नायिका को पानी से इतनी जलन होने लगती है कि वह गा उठती है 'पानी में जले मेरा गोरा बदन।'

भीगी भीगी नायिका बरसों से दर्शकों का तन और मन तर करती आयी हैं। इन नायिकाओं में नई पुरानी सभी नायिकाएं शामिल हैं। यदि गुजरे जमाने की बात करें तो मधुबाला को अपने भीगे बदन से दर्शकों को तरबतर करने में महारत हासिल थी। 'चलती का नाम गाड़ी' में वह किसी नदी में डुबकी तो नहीं लगाती है। बल्कि, देर रात भीग कर गैरेज में अपनी खराब कार सुधरवाने आती है तो उसे भीगा देख दर्शकों की तबीयत खुश हो जाती है। बरसात की रात में जब दर्शक मधुबाला को भीगे पल्लू को निचोड़ते हुए देखते हैं तो उनके सीने पर भी उस नायक की तरह तीर चलने लगते है जो कहता है 'सुर्ख आंचल को दबाकर जो निचोड़ा उसने दिल पर जलता सा एक तीर छोड़ा उसने।'

नायिकाओं को यदि परदे पर सबसे ज्यादा भिगोकर दर्शकों को तर करने वाले किसी एक फिल्मकार का नाम लेने को कहा जाए तो हर किसी के लब पर बॉलीवुड के ग्रेटेस्ट शौमेन राजकपूर का नाम आएगा। जिनकी पहली फिल्म भले ही आग हो लेकिन दूसरी फिल्म 'बरसात' से उन्होंने अपनी तमाम नायिकाओं को भिगोने का जो सिलसिला आरंभ किया वह मरते दम तक नहीं छोड़ा। राजकपूर की फिल्मों में नायिकाएं जितना भीगी हैं, उतनी किसी और फिल्मकार की फिल्मों ने नायिकाओं को नहीं भिगोया।

'बरसात' में उन्होंने निम्मी और नरगिस को भिगोया तो 'आवारा' में छोटे से पोखर में नरगिस को बिकिनी पहनाकर पानी में डुबकियां लगवाई। 'श्री 420' में बरसात में भीगती नर्गिस और राज कपूर का गीत प्यार हुआ इकरार हुआ आज भी

देखने वालों को अंदर तक तरबतर कर देने की क्षमता रखता है। 'जिस देश में गंगा बहती है' में उन्होंने पद्मिनी को जमकर पानी के झरने और पोखर में नहलाया है तो संगम में बिकनी पहनी वैजयंती माला को नहाते देख जब राज कपूर कहते हैं बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं तो राधा बोले या न बोले दर्शक जरूर भीगकर कहते थे होगा ... होगा ... होगा ! 'मेरा नाम जोकर' में तो उन्हें सिम्मी और पद्मिनी दोनों को भिगोने का मौका मिला। हवा के थपेड़े और पानी की बौछार में भीगती पद्मिनी जब कहती है अंग लग जा बालमा तो दर्शकों को यही लगता है कि पद्मिनी उन्हीं से यह अनुरोध कर रही है। राज कपूर ने इसके बाद 'सत्यम शिवम सुंदरम' में जीनत को झरने में नहलाया तो 'राम तेरी गंगा मैली' में झीने कपड़े पहने मंदाकिनी ने झरने में नहाकर दर्शकों की खूब लू उतारी है।

राज कपूर के बाद मनोज कुमार ने भी नायिकाओं को खुब नहलाया है। 'रोटी कपड़ा और मकान' में लाखों का सावन जाए का ताना मारकर भीगती जीनत अमान, पानी रे पानी तेरा रंग कैसा में उन्होंने जया को भिगोया और जिंदगी की न टूटे लड़ी में हेमा मालिनी को जंजीरों से जकड़कर खूब भिगोया है। देव आनंद ने 'देस परदेस' में तू पी और जी में तो टीना मुनीम को शराब के ड्रम में डुबोकर दर्शकों को ठंडक परोसी। 'चक्र' में स्मिता पाटिल को नहाते देख दर्शक तर हो गए, तो 'दयावान' में बाथरूम में विनोद खन्ना को नहलाते नहलाते माधुरी जिस तरह से भिगी दर्शकों को विनोद खन्ना की तकदीर से जलन होने लगी थी। वैसे देखा जाए तो नायिकाओं के स्नान-पुराण बहुत लम्बा है। लेकिन, यह तो तय है जब भी नायिकाएं परदे पर डुबकियां लगाती हैं, दर्शकों को कुंभ की डूबकियों से ज्यादा पुण्य की प्राप्ति हो जाती है!

...चंद फसाने याद आए...!

प्रकाश पुरोहित

आ प इंडिया से हैं...?

''हां...!''

''क्या मैं आपको छू लूं?''

''क्यों, क्या बात है?''

''दरअसल, मैंने आज तक कोई 'इंडियन' नहीं देखा है...।''

''तो फिर गले लग ले यार...।''

लाहौर के बाजार में घूमते हुए करीब सत्रह साल का युवक मिला था। तब भारत की क्रिकेट टीम करीब तेरह साल बाद पाकिस्तान गई थी खेलने, तभी कुछ हिंदुस्तानी वहां क्रिकेट के बहाने जा पाए थे। इस युवक के लिए किसी इंडियन को देखना ही अचंभा था। ऐसे ना जाने कितने किस्से उन दिनों यहां-वहां हो रहे थे। हर भारतीय का पाकिस्तान में अलग मगर एक जैसा अनुभव था हो, उससे कुछ बदल थोड़े ही जाता है।

कैसेट्स का दौर था और यही हसरत थी कि यहां से ज्यादा से ज्यादा म्यूजिक कैसेट्स खरीद ली जाए। मुश्किल यह पेश आती थी कि जब दुकानदार से दाम पूछता तो सभी का लगभग यही जवाब होता ''जो मुनासिब समझें दे दें।'' अब बताइए, मुनासिब का फैसला हो तो कैसे! आप कितना भी ज्यादा दें, लगता था कम दिए, और वे बगैर गिने रख लेते थे।

करीब एक माह रहा कराची, रावलपिंडी, पेशावर, इस्लामाबाद और लाहौर में।

लाहौर में लतीफ मियां से दोस्ती हो गई, टैक्सी ड्राइवर थे। पहले ही दिन साथ हो लिए तो आखरी दिन हवाई अड्डे पर ही छोड़ा। करीब सात दिन लाहौर में रहा, मगर लतीफ मियां ने कभी पैसे नहीं लिए ''ले लूंगा हुजूर, पैसे कहां भागे जा रहे हैं।''

''चाचा, कुछ कपड़े ड्राय-क्लीन करवाने हैं।''

''हो जाएंगे हुजूर, मुझे दे दीजिए।''

दो रोज बाद लतीफ मियां कपड़े ले कर आए तो देखता ही रह गया, क्या तो धुलाई और क्या कड़क इस्त्री।

''चाचा, कितने पैसे हुए?''

''काहे के पैसे हुजूर, घर पर हमारे भी कपड़े धुलते हैं, आपके भी धुल गए।'' घर लौटने के बाद कई

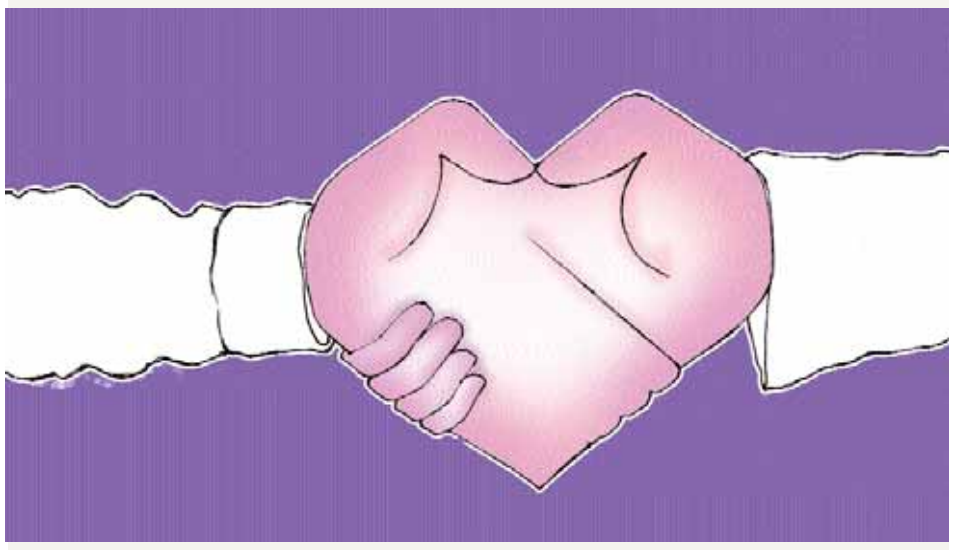

कि दिल से चाहते हैं और मेहमानदारी में कसर नहीं छोड़ते। शायद ही कोई भारतीय होगा, जिसकी आंख नम नहीं हुई हो। आम लाहौरी पठानी सूट में ही नजर आते हैं, भारतीय की पहचान ही पेंट-शर्ट होती है, वरना तो कोई फर्क नहीं है। कपड़े से पहचान यहां भी है और वहां भी, मगर नजरिए का फर्क है!

लाहौर हवाई अड्डे पर बैठा था, कराची की उड़ान का इंतजार था। तभी पास बैठे शख्स ने पूछा ''क्या फैज साहब के फेन हैं आप भी?'' टाइम पास के लिए अनजाने में 'आए कुछ अब्र, कुछ शराब आए' गुनगुना रहा था कि उनके कान ने सुर पकड़ लिए। ये खलील हुसैन थे, जो कराची ही जा रहे थे।

''दुनिया में ऐसी कौन-सी जगह है, जहां फैज साहब के दीवाने नहीं हैं'' मैंने कहा तो फिर उन पर ही बातें शुरू हो गईं। तभी फ्लाइट अनाउंस हो गई। खलील मियां तेजी से उठे और चले गए, लेकिन थोड़ी देर में क्या देखता हूं कि मोटी-सी किताब लिए दौड़े चले आ रहे हैं हांफते हुए ''ये फैज साहब का दीवान है..., अपने इस पाकिस्तानी भाई की तरफ से मंजूर करें'' कहते हुए दस्तखत किए, अपना पता लिखा और मुझे दे दी।

किताब के पन्ने पलटते हुए मैं यह भी नहीं कह सका कि मुझे उर्दू नहीं आती, क्योंकि प्रेम की भाषा तो समझ आ रही थी। भारत लौट कर जब उर्दू दां दोस्त से बात की तो फैज साहब का वह दीवान आज भी ना जाने किसके हाथ में होगा,क्योंकि नायाब था और उर्दू जानने वालों की कमी नहीं है। इस हाथ से उस हाथ पढ़ा जा रहा है और मुझे वापसी का इंतजार भी नहीं है!

मुझसे अकसर यह पूछा जाता रहा ''कैसा लग रहा है पाकिस्तान?'' तो मेरा यही जवाब होता था ''घर जैसा!'' कुछ भी तो अलग नहीं है। उस समय वहां के बाजार में भारतीय फिल्मों के ही गीत बज रहे थे और टीवी भी हमारे ही दम से चल रहे थे। हमारी फिल्में हमसे ज्यादा देखते हैं पाकिस्तानी। और तो और, जगह-जगह पोस्टर भी सनी देओल, संजय दत्त, सचिन तेंडुलकर और ऐश्वर्य राय के नजर आते थे। वहां भटकते हुए यह याद ही नहीं रहता था कि हम किसी और देश में हैं, क्योंकि सभी कुछ तो अपने जैसा है। सीमा भले ही सियासत ने खींच दी महीनों तक उन कड़क प्रेसबंद कपड़ों की तह भी नहीं खोल पाया था कि लाहौर की खुशबू आती थी उनसे!

आखिरी मैच था भारत-पाकिस्तान के बीच लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में। स्टेडियम जा रहा था तो देखा टैक्सी में मिठाई का डिब्बा रखा है!

''लतीफ मियां... ये मिठाई कहां ले जा रहे हैं...?'' मैंने यूं ही चुहलवाले अंदाज में पूछ लिया।

''हुजूर मैच के बाद खाएंगे...।'' लतीफ मियां ने कहा!

''तो आपको यकीन है आज पाकिस्तान जीतेगा?'' मैंने पूछा।

''ये कब कहा मैंने! इंडिया जीता या पाकिस्तान... हम तो जीत की मिठाई खाएंगे... किसी की हार की थोड़े ही! पीठ भी अपनी है और पेट भी अपना है... सियासत ने सरहदें भले ही खींच दी हों... पर आज भी आम पाकिस्तानी का दिल इंडिया के नाम पर यूं धड़कने लगता है, जैसे महबूब का नाम ले लिया हो। भारत-पाकिस्तान नहीं... आज तो हम जीतेंगे... इसीलिए मैच के बाद मिठाई खाएंगे... और खिलाएंगे।'' लतीफ मियां ने कहा तो सही में मुंह मीठा हो गया!

जब इंदौर में दोस्तों ने पूछा 'कैसा लगा पाकिस्तान?'' तब यही जवाब होता था ''लगता है अब मैं हाजी हो गया हूं'', अपने अपने हज होते हैं।

आज ये बातें इसलिए याद आ रही हैं कि नेटफ्लिक्स पर पिछले हफ्ते 'द ग्रेटेस्ट राइवलरी भारत-पाकिस्तान' डॉक्यूमेंट्री रिलीज हुई है। यह उसी समय के दौरे की है, जब भारत की क्रिकेट टीम तेरह साल बाद पाकिस्तान खेलने गई थी। हर एक के मन में डर था, लेकिन देखते ही देखते डर तो ना जाने कहां काफूर हो गया और हर दिन का दर्द ऐसा साथ लगा कि आज भी याद कर आंख भीगने लगती हैं। शायद ही कोई रोज ऐसा रहा हो, जब रोए न हों।

गुरुद्वारा पंजा साहब जाने का वीजा नहीं था हमारे पास, लेकिन चले गए तो पुलिस का सिपाही वहां तैनात था। ''मैं तो कुछ नहीं करूंगा, लेकिन कोई अफसर आ गया तो कुछ नहीं कर पाऊंगा, आप जल्दी से वापस चले जाएं तो बेहतर रहेगा।'' पानी की बोतल देते हुए उसने प्यार से समझाया था।

कहते हैं, जिसने लाहौर नहीं देखा, वह जन्मा ही नहीं। यह एहसास भी हमेशा मेरे साथ रहता है कि मैं जन्मा हूं कि 'मैंने लाहौर देखा है।'

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

जो कोई पूछ ले कि क्या डिलीट किया?

ये कैसी बात है जो आपसे मैं पूछ रही हूँ। आपने अक्सर देखा है व्हाट्सअप पर लोग कुछ लिखते है फिर डिलीट कर देते हैं। वजह कुछ भी हो वो दूसरा मैसेज डाल देते है। वाह रे मानव मन, जो लिख के डाला है उसमें आपकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं, पर जो डिलीट किया, वो क्या था जानने की तीव्र इच्छा जागती है। कई बार तो लोग पूछ ही बैठते हैं, क्या डिलीट किया? हो सकता है कोई बात नकारात्मक हो सामने वाला नहीं चाहता कि आप उसे पढ़े तो आप भी ऐसा ही क्यों नहीं करते उसे भूल जायें जो डिलीट किया गया है। बस्स, आप समझ गये ना मैं किस विषय पर आ रही हूँ। कितनी बातें होती है जो आपके मन में घुमड़ती है ''आज तो मैं उसे सुना ही दूँगा उसने मेरे खिलाफ ऐसा किया या मेरे साथ अतीत में ऐसा क्यों हुआ? जी हां, जनाब व्हाट्सअप के मैसेज को डिलीट करना बहुत आसान है पर मन में छुपी नकारात्मक बातों को डिलीट करने का कोई बटन नहीं है और ना ही इस ख्याल से कि चलो इस बात को हम डिलीट कर दें और बात डिलीट हो जाए।

दरअसल, यूनिवर्सल ट्रूथ है कि जितनी आप किसी से नफरत करते है उतना ही नफरत आपके भीतर नकारात्मकता को बढ़ाती है। क्यों ना अपने भीतर उसे उस चरित्र को धीरे धीरे डिलीट करना शुरू दें? पर कैसे? उसके लिये सबसे पहले उस चरित्र और बात को आप सोचे वो कभी आपके जीवन में हुई नहीं पर ये सच है कि जितना आप भूलने की कोशिश करेंगे बातें उतनी ही तीव्रता से याद आयेंगी। ऐसा हरगिज नहीं करें बल्कि नई यादें

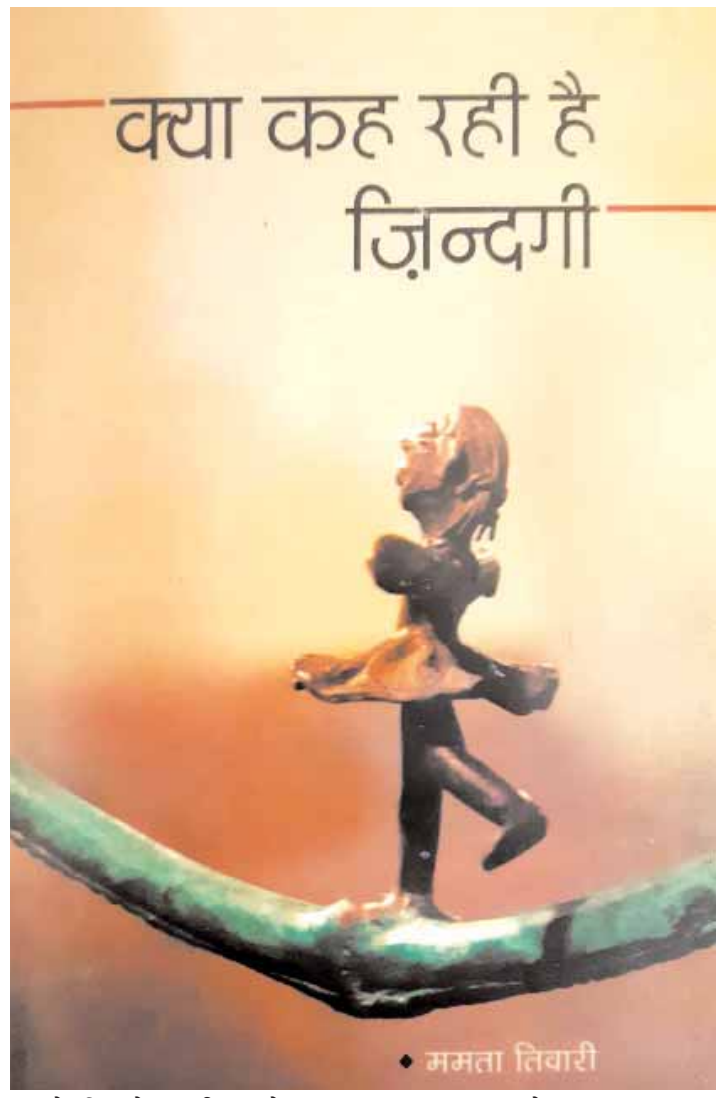

बनायें जिससे पुरानी अपने आप नीचे स्तर पर आकर डिलीट हो जायेंगी नई यादों को इतना बढ़ाये कि उसमें इतना घुलमिल जायें कि नकारात्मक पुराना डिलीट हो जायें।

यहाँ चूंकि आपके मन की बात है भीतर की बात है तो किसी को पता ही नहीं चलेगा कि आपने क्या डिलीट किया। बल्कि जो नकारात्मक बातें दुहरा दुहरा कर आप गुनते रहते थे सब के सामने जब वो दोहराना बंद कर देंगे तो अपने आप सब पूछेंगे कि कैसे डिलीट किया? मुझे मालूम है हम सबके पास यादों का पिटारा है हम आधा जीवन अतीत आधा भविष्य में जीते है तो ये बात दोनों काल पर लागू होती है क्योंकि कई लोग भविष्य की नई यादों में भी नकारात्मकता डाल देते है। किसी लकीर को मिटाने से तो अच्छा है अपनी लकीर बड़ी कर लें। उसने बिजनेस मुझ से बाद में शुरू किया और मुझसे आगे बढ़ गया ये सोचने की बजाय अपने बिजनेस की ख़ामियों को डिलीट कर अपना बिजनेस आगे बढ़ाएं।

ये बात हर क्षेत्र में लागू होती है। बच्चों की पढ़ाई में ऐसा ना करें कि उसके नबंर मुझसे ज़्यादा कैसे आये बल्कि कोशिश करो कि उस बात को डिलीट कर नये सिरे से पढ़ाई शुरू करों प्रतियोगिता अपने से हो ज़्यादा अंक लाने वाले बच्चे का स्कोर डिलीट कर अपना, स्कोर बढ़ायें। कैरियर, बिजनेस, घर, साहित्य हर क्षेत्र में प्रतियोगिता है सब में नई लकीर खींचे और अतीत की दुःखद यादों से छुटकारा पाये और दूसरों से ये कभी ना पूछे क्या डिलीट किया। जाहिर सी बात है कोई नकारात्मक बात होगी। बल्कि सभी पुराने गिले शिवे डिलीट कर उन्हीं से नई दोस्ती कायम कर पूछे सुबह सवेरे और क्या कह रही है जिंदगी...?

आज अतीत से दोस्ती ख़त्म करें

जो हो सकता है वर्तमान में करें

क्यों दुःखी करते हो खुद को पुराना सोचकर

हो सके तो नया बना, पुराना डिलीट करें

माना ये उतना आसान नहीं है

पर मिटा के सब नकारात्मक सोच

दिल को खुशियों, आनंद से भरे

कल किसने देखा है मेरे दोस्त

आज को आज से रौशन करें।

हंगामा है क्यों बरपा...!

यू-ट्यूब पर टिकट वाले शो के जज की बातों से हिंदुस्तान का सोशल मीडिया इस कदर परेशान हुआ कि लगभग हफ्ता होने को आया, न तो शिकायतें रुक रही हैं और न ही शो बनाने वालों का रोना। रोज बियर बाइसेप्स उर्फ रणवीर अलहाबादिया और समय रैना के आंसुओं से तरबतर वीडियो चले आ रहे हैं। अगर आप उनमें से हैं, जिन्हें इस हंगामे की कोई खबर नहीं है तो यकीनन ऐसी जगह पर हैं, जहां दुनिया की गंदगी असर नहीं डाल सकती। बेहतर हैं वहीं रहे।

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

गलत-बेहूदी बात कहना, बुरा शो बनाना... यह सारी बातें पूरे शो में थीं, जिन्हें सुन कर लगा कि ऐसी भाषा को जिस तरह रोडी'ज शो में क्वालिटी बना कर पेश किया, यह वहीं से निकली नदियां हैं जो आज घाट के ऊपर बह रही हैं। समय और रणवीर ही इसके लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन उन्हें धमकियां देना चाहिए या उन पर केस हो जाना चाहिए या सरकार को इस पचड़े में पड़ना चाहिए, सभी का जवाब न ही होगा। इनकी बातों से किसी का कोई नुकसान हुआ है या किसी को जानबूझ कर नुकसान पहुंचाने की कोशिश हुई है? जवाब 'नहीं' है तो फिर हंगामा है क्यों बरपा...! रणवीर के बेहूदा सवाल चौंका देते हैं, क्योंकि कहीं न कहीं ऐसे शो और प्रोग्राम पश्चिम और खास तौर से अमेरिका की नकल ही होते हैं। जो

सवाल रणवीर ने पूछा, वही सवाल अमेरिका में महिला ने पुरुष से पूछा था।

क्या भारत की कोर्ट में मुकदमें कम हैं, जो ऐसे मसलों को भी कोर्ट में सुना जाएगा? पुलिस के पास थाने को ठीक से चलाने के लिए सिपाही नहीं मिलते, आज इनके घरों से बेहूदगी वाले जोक्स को खोजने निकल पड़ी है। जावेद अख्तर भी समय रैना के शो पर आए थे और कह गए कि मिर्ची की तरह इस्तेमाल की जाती है, लेकिन अब यह सिर्फ मिर्ची का सालन बन गया है। कुछ समय बाद नया शगूफा सामने आएगा और इसे भूल जाएंगे, लेकिन ऐसी बाढ़ दोबारा न आए, इसकी कोई गारंटी नहीं है। बात गाली और बुरे शब्दों के बगैर भी कही जा सकती है।

देखने वालों की भी जिम्मेदारी है कि किसे बढ़ावा दे रहे हैं, लेकिन किसी भी हालत में यह कोर्ट में ले जाने लायक नहीं हो सकता, नहीं तो सड़क पर चलते समय अनगिनत केस रोज दर्ज हो जाएंगे। बुरा काम पेश करने के लिए भी मुकदमा नहीं किया जा सकता, वरना कितने ही इस जद में आ जाएंगे।

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

फिर हम क्यूँ माने किसी की बात!

अ बचपन से सुनते आए मौसम का हाल। जब कभी रेडियो पर बताता कि तेज हवा के साथ बारिश होगी, तब तब मौसम मिजाज बदल लेता और न बारिश होती और न ही तेज हवा चलती। लगता कि मौसम भी रेडियो लगा कर बैठता होगा और विपक्ष की तरह हर काम में अड़ंगा लगाने की ठान कर बैठा हर घोषणा के विपरीत काम करता। जब मौसम विभाग कहता कि धूप निकलेगी तो तुरंत ही कपड़े आचार धूप दिखाने के लिए छत पर निकाले जाते और उसी रोज बारिश होती तो भाग भाग कर वापस लाए जाते।

आमजन का तो विश्वास ही उठ गया था इनकी घोषणाओं पर से बिल्कुल वैसे ही जैसे सरकार पर से। लेकिन मौसम विभाग ने न तो कभी घोषणा करना बंद किया, न ही सरकार ने। विश्वास न करना तुम्हारा काम और घोषणा करना इनका काम और इनकी घोषणाओं को मिट्टी मे मिलाने का काम मौसम का और विपक्ष का।

वैसे ही जैसे सरकार चुनावों मे किया अपना कोई वादा पूरा कर दे तो लगता है कि ये क्या हुआ? वैसे ही 100 में से एकाध बार अगर मौसम विभाग की घोषणा सच निकल भी जाए तो लगता कि आज या तो इनसे कोई गल्ती हो गई या फिर मौसम के रेडियो को सिग्नल नहीं मिला होगा। कौन जाने उसके यहाँ भी बिजली गोल हो जाने की व्यवस्था हो। अंदाज ही तो लगाना है तो यही सही। सरकार जब कभी अपना कोई वादा पूरा कर दे तब तो अंदाज भी नहीं लगाना होता। बस नजर उठाओ तो सामने कोई चुनाव आता साफ नजर आ जाएगा।

खैर, मौसम विभाग की घोषणा से बात शुरू हुई और कहाँ चली गई। ऐसे परिवेश में पाले बढ़े जब कनाडा पहुंचे नए नए और यहाँ के मौसम विभाग ने घोषणा की आज बर्फ गिरेगी तो आदतन नजर अंदाज करते हुए बिना बर्फ वाले लेदर के जूते पहने ही निकल लिए। मगर ये क्या, यहाँ तो वाकई में बर्फ गिरी और तैयारी से न निकलने के कारण बर्फ के साथ साथ फिसल कर हम भी गिरे। दो तीन लोगों की मदद से उठाए गए और फिर पाँच दिन बात न मानने की सजा के तहत कमर में भीषण दर्द लिए करहाते रहे। तब लोगों ने बताया कि मौसम का हाल सुन कर घर से निकला करो। यहाँ जब मौसम विभाग की घोषणा में गल्ती होती है तो वो वाकई में गल्ती होती है और ऐसा 100 मे से एकाध बार होता है कि वो बोलें कि आज मौसम -10 रहेगा और मौसम -10 तक न गया हो।

सरकारी घोषणायें भी बिना चुनाव आए ही अक्सर पूरी कर ही दी जाती हैं। चुनाव आ भी रहे हों तो भी पता ही नहीं लगता कि चुनाव हैं भी। न रैली, न जन सभाएं और न ही बड़े बड़े पोस्टर। न तो कोई दारू बांटने वाला और न ही कंबल साड़ी। खुद की गाड़ी से जाओ। गत्ते के डिब्बे में वोट डाल आओ। वोटिंग का समय समाप्त। पोलिंग स्टेशन वाले उन डिब्बों को अपनी कार में रखकर शहर की काउंटिंग स्टेशन पर ले जाकर हर उम्मीदवार के एक एक एजेंट के सामने गिन कर 2 घंटे में ही गिनती खत्म। फोन से रिजल्ट भी भेज दिया। जीत की घोषणा हो गई और चुनाव सम्पन्न। रस ही नहीं है चुनाव में चुनाव वाला।

अब जब आदत हो गई है इतने सालों में इन मौसम विभाग वालों की बात मानने की तो अब ये स्लिप मारने लगे हैं। कभी कहते हैं बर्फ का तूफान आ रहा है और फिर शाम तक बताएंगे कि बाजू वाले शहर से निकल गया। मगर जब से खुद दो चार बार फिसले हैं और मित्रों की फिसलने से टूटी हड्डियों के किस्से सुनते हैं तो भले ही ये गलत भविष्यवाणी कर दें, न मानने की गल्ती करने की तो सोचते भी नहीं।

ऐसे ही जैसे कानून तोड़ने की सजा सचमुच तगड़ी हो तो फिर भला कौन कानून तोड़ेगा जैसे किन्हीं देशों में चोरी करने पर हाथ ही काट डालते हैं तो वहाँ भला कौन चोरी करेगा।

मगर हम तो जानते हैं न कि कानून तोड़ों और पॉवर और पैसे से रिश्ता जोड़ों तो भला कोई हमारा क्या बिगाड़ पाएगा- फिर हम क्यूँ माने किसी की बात!